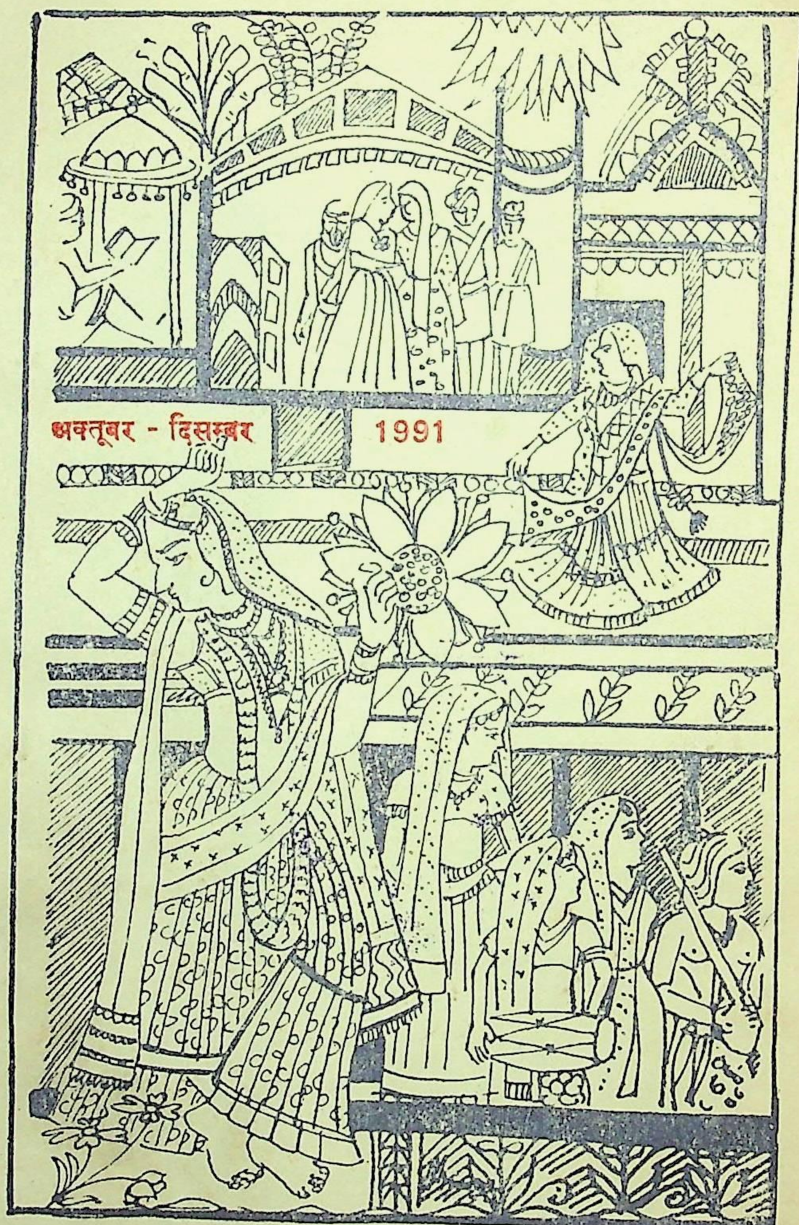
द्वीप लहरी



हिन्दी साहित्य कला परिषद

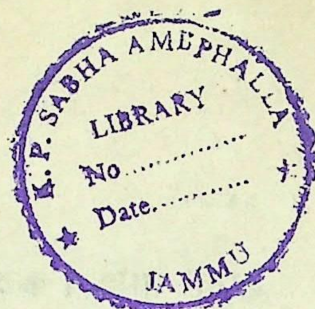
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह

पोर्ट ब्लेयर

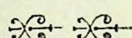
रचनाकारों से निवेदन



प्रकाशन
हेतु रचनाएं भेजते
हुए ध्यान रखिए कि
रचनाएं 1000 से अधिक
शब्दों की नहीं हों पांडुलिपि
कागज के एक ही ओर लिखी हों,
लिखावट स्पष्ट हो, विषय समसामयिक हो,
साहित्य की सभी विधाओं की रचनाओं का स्वागत
है स्वीकृत रचनाएँ पत्रिका के आगामी अंको में प्रकाशित
की जाएँगी सम्पादक का निर्णय अन्तिम माना जाएगा।
रचनाएँ लौटाई नहीं जाएगी और उस संबंध में किसी
भी प्रकार का पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा।
प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक देने की
व्यवस्था फिलहाल नहीं है। प्रकाशित
रचनाओं की प्रतियाँ रचनाकारों
के पास अवश्य ही भेजने
की व्यवस्था की
जाएगी।



द्वीप लहरी

वर्ष - 3  अंक 12

अक्तूबर - दिसम्बर - 1991

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

❁ प्रकाशक :

हिन्दी साहित्य कला परिषद्

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
पोर्ट ब्लेयर

❁ मूल्य

एक प्रति — रु० 5/-
वार्षिक — रु० 20/-
आजीवन — रु० 500/-

❁ मुद्रक :

ज्योति प्रिन्टर्स
मिडिल पाइंट, पोर्ट ब्लेयर
दूरभाष : 20974

सम्पादकीय —

ज्योति पर्व 'दीपावली' की हार्दिक मंगल कामना के साथ हम इस वर्ष का चौथा और अन्तिम अंक पाठकों की सेवा में समर्पित करते हैं। गत तीन वर्षों से मुख्य भूमि और द्वीप समूह के विद्वान लेखकों, कवियों, कथाकारों और अन्यान्य शीर्षस्थ बुद्धि जीवियों के अनवरत सहयोग और शुभाशीर्वाद से ही 'द्वीप लहरी' का नियमित और अबाध प्रकाशन अब तक जारी है और आगे भी जारी रहेगा। इसी सहयोग और सद्भाव के परिणामस्वरूप हम इस वर्ष 'द्वीप लहरी' के दो बहुचर्चित विशेषांक भी प्रकाशित कर पाए। इस प्रकार 'द्वीप लहरी' अब देश के हर कोने तक पहुँच कर द्वीप समूह का विशिष्ट साहित्यिक और सांस्कृतिक चित्र प्रस्तुत कर सकने में सक्षम है। उसके साथ ही 'परिषद्' ने अपने अन्य उपयोगी प्रकाशनों के माध्यम से भी पाठकों के बीच 'द्वीप समूह' की इन्द्र धनुषी छवि प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है। इसी का परिणाम है कि देश की बड़ी बड़ी साहित्यिक संस्थाओं/संस्थानों और अकादमियों का ध्यान भी अब अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह के साहित्यिक क्रिया - कलापों की ओर आकृष्ट होने लगा है।

देश में जहाँ 'हिन्दी साहित्य कला परिषद्' के कई एक प्रकाशन अत्यधिक चर्चित और लोकप्रिय हुए हैं वहीं हमारी पत्रिका 'द्वीप लहरी' को भी यथेष्ट प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। हाल ही में पत्रिका - परिवार के कर्मठ सदस्य और उसके सम्पादकीय दायित्व का निर्वहन कर रहे श्री आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज' को जहाँ मथुरा की साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्था 'रस भारती' ने साहित्य, संगीत तथा शोध - समीक्षा के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकारते हुए उन्हें 'मान पत्र' अर्पित करके सम्मानित किया वहीं 'हिन्दी अकादमी' हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) ने उन्हें 'द्वीप-दर्पण' की रचना करने पर 'काव्य शास्त्री' और 'द्वीप-लहरी' के कुशल सम्पादन के लिये 'सम्पादक रत्न' की सम्मानोपाधियाँ अपने 35 वें अधिवेशन में प्रदान की हैं। पत्रिका परिवार और परिषद् के लिये यह गौरव का विषय है।

आगामी नव वर्ष में हम नवीन साज - सज्जा तथा सम-सामयिक स्तरीय सामग्री से समन्वित 'द्वीप लहरी' लेकर आपकी सेवा में पुनः प्रस्तुत होंगे। इसी संकल्प के साथ आपके सम्पूर्ण सहयोग की आशा लिये हम आप सब को नये वर्ष की अग्रिम शुभ कामना अर्पित करते हैं।

— प्रधान सम्पादक

अनुक्रम

मन्थन —

जीवन की अनमोल धरोहर – धैर्य

डॉ० जमनालाल बायती डी० लिट०

धैर्य का अर्थ उतावलेपन की अनुपस्थिति से नहीं है और न ही किसी काम को धीरे सुस्ती से करने से है। धैर्य का अर्थ इससे कहीं अधिक गहरा, असुविधाजनक स्थितियों में सहनशील बन कर कार्य करते रहने से है, बिना आवश्यक साधनों या उपकरणों की कमी बताये कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाना ही धैर्य कहा जाता है। इस प्रकार शब्दकोश के अनुसार धैर्य का अर्थ है- तकलीफ सहते हुये, बिना किसी प्रकार की शिकायत किये, प्रयत्न करते रहना, काम को आगे बढ़ाने की आदत एवं क्षमता। इस अर्थ में दो चीजें उत्पन्न होती हैं- अप्रिय एवं कष्टप्रद स्थिति का होना तथा शान्त चित्त से काम करते रहना। यदि कोई मनुष्य कष्ट पाकर धैर्य छोड़ दे तो वह मनुष्य ही क्या? इसी बात को कालिदास ने यों कहा है—

> "यदि पर्वत भी वृक्ष के समान आँधी से हिल उठे तो उन दोनों में अन्तर ही क्या रहा?"

इसी भांति धैर्यशील व्यक्तियों की प्रशंसा करते हुए वाणभट्ट कहते है कि धीर व्यक्ति विपत्ति को भी पार कर लेते हैं। (कादम्बरी, पूर्व भाग)

किसी राजकीय कार्यालय में इन्तजार करने की अप्रिय स्थिति पर विचार कीजिये। आज अधिकांश आदमी अपने समय को विनोद या गप-शप या आरामदायक कार्यों में बिताना पसंद करते हैं पर बहुत कम आदमी ही अनुभव करते हैं कि प्रतीक्षा करने से उनका मनचाहा कार्य हो जाता है।

वास्तव में चंचलता ऐंठने, क्रोध तथा अभिशाप की आदत कुछ आदमियों को चिड़-चिड़ा बना देती है तो कुछ अन्य आदमी मन ही मन उबलते हैं। ऐसा करके वे अपने ही स्वास्थ्य की हानि करते हैं मानसिक शान्ति नष्ट करते हैं और अन्त में सीख ही लेते हैं कि अपनी असफलता या कड़वाहट को मित्रों में बाँटना अच्छा नहीं हैं, निरर्थक है। वहुत ही कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जो इन अप्रिय स्थितियों में भी सही रूप में धैर्य रखना सीख लेते हैं। इस सम्बन्ध में रामचरित मानस में कहा गया है– धीर पुरुष कार्य सिद्धि में विलम्ब होने पर भी अपना सर्वस्वभूत धैर्य नहीं छोड़ते।" (3, 35) श्री नारायण पण्डित भी इसी प्रकार विचार रखते है। उनके अनुसार "बड़े लोग विपत्ति आने पर धैर्य रखते हैं।" (हितोपदेश 3, 44)

ऐसे लोगों के पास करने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण कार्य है या नहीं इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि धैर्यशील पुरुष सुखप्रद स्थितियां न होने पर भी तथा निकृष्ट स्थितियों में भी सर्वाधिक अच्छा काम करने का प्रयन्न करते हैं। जिन कारणों से वे असुविधाजनक स्थितियों में आये हैं, वे उन स्थितियों तथा कारणों पर विचार करना ही पसंद नहीं करते हैं तथा धैर्यवान पुरुष प्राप्त समय को अधिकाधिक लाभदायक उपयोग करने का रास्ता निकाल ही लेते हैं। जिस समस्या पर वे काम करते हैं, उसके सम्भावित हल के बारे में सोचते हैं, शायद वे मित्रों के सराहनीय एवं रुचिप्रद प्रयत्नों पर भी ध्यान दे रहे हों तथा मानव व्यवहार के सामान्य सिद्धांतों तथा नियमों पर भी एकाग्रचित हो विचार कर रहे हों, उनसे लाभ उठाने को भी तत्पर हों। इसीलिये डिजरायली ने कहा है कि धैर्य तो प्रतिभा का एक आवश्यक तत्व है।

प्रयत्न कब हो ?

यूनानी भाषा के अनुसार धैर्य शब्द का अर्थ है– प्रसन्नचित, हर्षयुक्त

आशावादी, सहनशील, बिना शीघ्रता या उतावलापन बताये प्रतीक्षा करना। इस प्रकार मूल रूप में कहा जा सकता है कि इन ऊपर दिये शब्दों से प्रभावित होना या प्रभाव में रहना ही धैर्य सूचक है। हम में से कई आदमी अपने अच्छे समय में, प्रसन्नतादायक क्षणों में धैर्यवान् रहते हैं, पर हमें अपने आड़े समय में, कष्ट के दिनों में भी धैर्यवान बना रहना सीखना चाहिये। इसीलिए कहा है कि स्थिर बुद्धि वाले पुरुष धैर्य से मृत्यु के पार हो जाते हैं। (वेदव्यास, महाभारत, उद्योग पर्व) कई प्रयत्न करने पर भी या सावधानियां रखने पर भी कई स्थितियों में सम्भव है, हम कुछ न कर पाएँ, धैर्य न रख सकें क्रोध फूट पड़े तथा हमें स्थितियों के प्रभाव में या दबाव में रहना पड़े। हम में से कई तो इन परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ प्रयत्न करते ही रहते हैं, काम को आगे बढ़ाते हैं। जहाँ तक हो सके, मानव को इन सब प्रतिकूल परिस्थितियों का भी प्रसन्नतापूर्वक सामना करना चाहिए।

कटुता तथा हीनता की अपेक्षा प्रसन्नतापूर्वक किया गया कार्य सरल माना जाता है, साहस बंधाना, प्रशंसा करना सरल कार्य माना जाता है। हमारी राह में बाधा खड़ी करने वाले या प्रयत्नों को बाधा पहुंचाने वालों के लिये भी इससे आदर्श या उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है तथा यह भी साहस या ढ़ाढस बंधाना ही है। यह हमें अपनी समस्याओं की ओर सकारात्मक ढंग से सोचने को प्रेरित करता है। इस सन्दर्भ में शेखसादी का यह कहना कितना सटीक है कि अनेक कार्य धैर्य से सम्पन्न होते हैं तथा जल्दबाज मनुष्य तो औंधा सिर के बल गिरता है। वास्तव में यदि हम अपनी समस्याओं के हल के लिये कुछ कर सकते है तो बिना प्रतीक्षा किये, बिना समय गवांये हमें प्रयत्न करने चाहिये। उदाहरण के लिए- यदि कोई व्यक्ति बेकार है तो उस आदमी को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये दूसरा या तीसरा या और आगे अन्य स्रोत खोजना चाहिये, अन्य दिशाओं में विचार करना चाहिये। सम्भव है, उसे तत्काल

हल न मिले, राह न सूझे, ऐसी स्थिति में निष्क्रिय न हो जाना चाहिए वरन् उल्टे धैर्यपूर्वक अपने प्रयत्न करते ही रहना चाहिये प्रयत्नों में शिथिलता नहीं लानी चाहिये। याद रखिए शिथिलता या प्रयत्नहीनता का अर्थ धैर्य नहीं है और न ही धैर्य का अर्थ है हाथ पर हाथ धरे आमदनी की प्रतीक्षा में बैठे रहना, बल्कि बेकार व्यक्ति को निरन्तर सहज रूप में बिना सजगता खोये प्रयत्नों में लीन रहना।

अपने आप के साथ धैर्य :

जब हम धैर्य पर विचार करते हैं तो प्रायः हम अन्य लोगों के रोमांचक तथा साहसी कार्यों के बारे में सोचते हैं पर हमें स्वयं भी धैर्य की आवश्यकता है, धैर्यपूर्ण व्यवहार तथा प्रयत्नों की आवश्यकता है। आपने व्यवहार में देखा होगा कि कुछ लोग कुछ समय में स्कूटर या साईकिल चलाना नहीं सीख पाते तथा वे शीघ्र ही निराश हो जाते है, सरोद सीखने वाले की भी यही स्थिति होती है, कुछ लोग अपनी चाही गति से एवं रूप में आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित न होने पर निराश हो जाते हैं। हमें अपने सुधार के लिये या आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित होने के लिये या स्कूटर सीखने के लिए अपने प्रयत्नों में ढिलाई नही लानी चाहिये, हमें सहनशीलता नही खोनी चाहिए। पलक झपकते ही या रात बीतते ही ऐसा हो जाना चाहिए, हमें सफलता मिलनी ही चाहिए इस स्थिति से निराश हुए लोगों की तब तक बहुत अधिक मदद नहीं की जा सकती जब तक कि उनके सोचने-विचारने के तरीके में, दृष्टिकोण में परिवर्तन न हो। सकारात्मक दृष्टिकोण का अपना महत्व है- सब काम आपके चाहे अनुसार उसी रूप में तो नहीं हो सकते। यह कठोर सत्य भी स्वीकार करना चाहिये।

धैर्य का प्रतिफल :

धैर्य के कई प्रतिफल हैं, उपहार हैं- सकारात्मक दृष्टिकोण, मस्तिष्क

की शांति, सौम्य, गम्भीर शान्त मन आदि। धैर्य वरदान स्वरूप है मुख्यतः जबकि हम दूसरों के साथ काम करते हैं। उत्सव के समय शिशु को खिलाते समय, पड़ौसी से बात करते समय, सहकर्मी के साथ समस्या का समाधान खोजते समय धैर्य का रूप सराहनीय बन जाता है।

कठिनाई या कष्टों के समय साहसपूर्वक आगे बढ़ने से, ढ़ाढ़स बंधाने से अधैर्य या अधीरता या असहिष्णुता के साथ जुड़ी कई समस्याओं या व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है– इनमें मुख्य हैं : उच्च रक्तचाप, निराशा में वृद्धि, सम्बन्धों में तनाव, संकुचित दृष्टिकोण या सोच विचार आदि। सम्भव है, धैर्य के समय कम शब्द ही बोले जाँय, सहकर्मी की भावनाओं को ठेस पहुँचे, निष्पादित कामों की गुणवत्ता निम्न हो; आदि ऐसे कामों को समय के अन्तराल पर दोहराना नहीं चाहिए चिड़चिड़ापन प्रकट न हो, क्रोध फूट न पड़े, शिकायत न की जाय क्योंकि ऐसा होने पर सहकर्मी के भी कार्य में बाधा पहुँचती है, उनका कार्य करना कठिन हो जाता है। इससे उनके कार्य की गुणवत्ता भी गिरती है। अधीरता, अधैर्य से तनाव या दबाव बढ़ता है, इससे मानसिक नैराश्य बढ़ता है, यह पराजय का सूचक है। इसीलिए रंगभूमि में प्रेमचंद जी ने एक जगह कहा है कि "धैर्य तो नैराश्य की अन्तिम अवस्था का नाम है। जब तक हम निरुपाय नहीं हो जाते, धैर्य की शरण नहीं लेते।" कुछ भी हो, धैर्य अपने आप में सहज पुरस्कार है तथा सहज पुरस्कार वरदान का, आशीष का अनुयायी है।

धैर्य का अर्थ सदैव ही प्रयत्नों की बार-बार जल्दी-जल्दी आवृत्ति होना नहीं है, धैर्य से अर्थ प्रयत्नों की शृंखला में कमी लाना भी नहीं है यद्यपि इससे कार्य प्रायः सरल हो जाता है पर धैर्य सर्वत्र ही प्रयत्नों में होने वाले विलम्ब को सहनीय बना देता है।

धैर्य प्रतीक्षा से कहीं अधिक है। धैर्य अन्तः मन की स्थिति है, मानसिक दृष्टिकोण है जो हमें शान्त, सहनशील बनाता है तथा प्रतीक्षा

से होने वाली असुविधा या दुखों से बचाती है। धैर्य का आशीष या उपलब्धि कई बार सामान्यतः दीखती नहीं है तथा न ही वह भौतिक है वरन् वह अन्तर्मन से जुड़ी हुई है तथा आध्यात्मिक है। ज्योंही हम दृष्टिकोण में धैर्यशील बनते हैं या धैर्यशील दृष्टिकोण अपनाते है तत्क्षण ही वरदान आशीष मिलता है, सुखी होते हैं। इस क्षेत्र में पाश्चात्य विचारक गेटे के विचार देखिए- "किसी कार्य के लिए कला एवं विज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, उसमें धैर्य की भी आवश्यकता पड़ती है।" यदि प्रतीक्षा के साथ अधीरता बढ़ती है तो वह दिमाग की शांति भी नष्ट करती है और मस्तिष्क या मानव मन को सुखी नहीं बना सकती है।

यदि हमें धैर्य का गुण नहीं मिला है या धैर्य से प्राप्त होनेवाला सुख नहीं मिला है तो हमें धैर्यशील बनने के दृष्टिकोण के परीक्षण करने की आवश्यकता है। देखना यह है कि क्या हम सही अर्थों में धैर्यशील बन गये हैं? और हां, यह परीक्षण का कार्य भी पर्याप्त धैर्य के साथ, शांत चित्त एवं सहिष्णुता के साथ करना है, न कि प्रतीक्षा की प्रक्रिया में।

जिस प्रकार कार्य का पुरस्कार ही अधिक काम का निष्पादन करना है, उसी भांति धैर्य स्वयं ही पुरस्कार है। यदि धैर्य का पुरस्कार नहीं दिखता है तो उसे और अधिक कठोरता से, निकटता से, सूक्ष्मता से देखना चाहिये। क्योंकि यदि आप धैर्यवान बन जाते हैं तो यह धैर्यवान बनना ही पुरस्कार है, धैर्यवान बनने की आदत को ही आपको पुरस्कार के रूप में लेना चाहिये। इसीलिए वाणभट्ट ने लिखा है- "सज्जनों का धन ही धैर्य है।" (कादम्बरी - 5, 4, 38) इसी वृत्ति के लिए कालिदास ने एक स्थान पर लिखा है "प्रचण्ड वायु में भी पहाड़ विचलित नहीं होते।" मानव को उनकी धीरता से पाठ सीखना चाहिए।

प्रवाचक-शिक्षाशास्त्र
डॉ० राधाकृष्णन् उच्च अध्ययन शिक्षासंस्थाम
बीकानेर (राज०) 334001

गीत

— अनिल खमपरिया

जिनके सीने भारत की तस्वीर जड़ी होगी
उनके कांधे भारत की तकदीर खड़ी होगी
देशप्रेम के लिये निछावर जिनका तन मन धन
उस दिल से दुनियां की क्या जागीर बड़ी होगी

मैं ऐसे दिलवालों का नित रूप सजाता हूँ
आओ भारत की माटी के गीत सुनाता हूँ

जो तन भट्टी में जल-जल कर लोह गलाता है
खरी दुपहरी जो खेतों में अन्न उगाता है
उस तन के कण-कण से जो जलधार निकलती है
वह श्रम-जल गंगाजल से पावन कहलाता है

ऐसे पावन जल श्रोतों को शीश नवाता हूँ.........

तन विन्ध्याचल, धन गंगा, मन उच्च हिमालय है
जिनका घर गुरुद्वारा, मस्जिद, चर्च, शिवालय है
कबिरा, नानक, मदर टेरेसा, तुलसी गुरु जिनके
उन अनपढ़ लोगों का यह पावन विद्यालय है

ऐसे पावन विद्यालय में दीप जलाता हूं.........

कृष्ण-कुटीर, जालपादेवीवार्ड
कटनी (म० प्र०)

चिन्तन —

आज का युग धर्म !

— डॉ॰ लारी आज़ाद

मोक्ष या निर्वाण धर्मशास्त्रों में मानव योनि का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। मानव जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है - परमानन्द की प्राप्ति। शांति और आनन्द रूपी ईश्वर की अनुभूति के तीन रास्ते मनीषियों ने सुझाए – कर्म, ज्ञान, भक्ति। मेरे चिन्तन में वर्तमान मानव का सर्वोच्च धर्म है - युग धर्म। मैं इसी को जीवन की सफलता का चौथा रास्ता मानता हूं। आधुनिक युग के भौतिकवादी शिकंजों से फंसा दिग्भ्रमित निरीह मानव स्वयं के लिए देश के लिए और सम्पूर्ण मानवता के लिए शांति और आनन्द कैसे तलाश सकता है- और चौथी राह का मै आपको पता दे रहा हूं।

हर प्रबुद्ध इंसान जानता है कि 'धर्म' उपासना पद्धति या कर्मकाण्डों का नाम नहीं बल्कि 'कर्त्तव्य' का पर्यायवाची है। महात्मा गांधी कहते थे कि मेरा धर्म 'DUTY' के चार अक्षरों में समाहित है न कि 'RIGHT' के पाँच अक्षरों में। 'गीता' में युग पुरुष कृष्ण ने कहा था कि केवल कर्म करना तुम्हारा अधिकार है - फल की चिंता करना नहीं। मेरी दृष्टि में अज्ञात परमात्मा की पूजा से भी बड़े धर्म हैं - जैसे : विद्यार्थी का धर्म है विद्योपार्जन, अध्यापक का धर्म है अध्यापन, माँ का धर्म हैं बच्चों का पालन, पति का धर्म है पत्नी से प्रेम, व्यवसायी का धर्म है परिश्रम, मेहतर का धर्म है स्वच्छता, अमीर का धर्म है करुणा, दुर्बल का धर्म है व्यायाम। संसार की कोई उपासना पद्धति ये नहीं कहती कि इन धर्मों को त्यागकर कर्मकाण्डी पूजा में लीन हो जाओ। ये ही प्राथमिक धर्म हैं – ईश्वर की पूजा वास्तव में यही हैं। जो अपने कार्य को ईमानदारी व लगन से करता है - यदि उसे पूजा - नमाज़ -

तीर्थ-दान का अवसर न मिले तो निश्चय ही परमेश्वर की उस पर कृपा होगी; उसे अवश्य ही शाँति व आनन्द की नैसर्गिक अनुभूति होगी।

तथाकथित धर्म के तीन मार्गों की वास्तविकता ये है कि आज तक किसी ने एक को सम्पूर्ण नहीं सिद्ध किया। ज्ञान के अक्षय भण्डार से इस संक्षिप्त जीवन में तिनका सा पाकर भी मनुष्य अतृप्त ही रहता है। न्यूटन कहता था कि मै ज्ञान - सागर के तट पर बालक की तरह खेलते में कुछ सीपी पाकर प्रसन्न हूं जबकि इस अथाह समुन्दर में अनमोल मोतियों का ख़ज़ाना छिपा है। सो परम ज्ञान का पार कौन कर पाएगा। सुकरात ने कहा था 'know Thyself' और भारत के महर्षियों ने कहा 'आत्मानम् विद्धि' - अपने आप को पहचानों। कितना कठिन है स्वयं को जानना! अहंकारी मानुष तुच्छ उपलब्धियों पर ही गर्वित होकर अपनी नगण्य वास्तविकता को नकारता है। ज्ञान का मार्ग बहुत दुष्कर है, इसे विरले ही पा पाते हैं - जैसे जनक, बुद्ध, महावीर, कबीर, सुकरात, ईसा, मोहम्मद आदि।

कर्म का पथ है तो निश्चित लेकिन आलसी इंसान कहाँ इस डगर पर डटा रहता है! शैतान और लौकिक माया उसे फल और अधिकारों के छलावे में डाल देते हैं। कर्म की सबसे बड़ी शर्त है ईमानदारी और मेहनत। एक बार हज़रत मोहम्मद ने एक साधारण किसान के हाथों को आनन्द पूर्वक चूमा था। उनके शिष्यों ने जब इस चुम्बन का रहस्य पूछा तो मोहम्मद साहब ने कहा कि इसके कठोर व खुरदरे हाथों से मेहनत की खुशबू आ रही है। किसान के श्रम की पूजा के सम्मान में महाकवि ने लिखा कि :

'जिस खेत से दहकां को मयस्सर न हो रोटी,
उस खेत के हर ख़ोशए-गन्दुम को जला दो।'

'कर्म ही पूजा है' - यह अकाट्य सत्य है। पिता का कर्म है परिवार का पोषण, नारी का धर्म है पति की सेवा, बच्चों का धर्म है माँ-बाप की सुश्रुषा, निर्धन का कर्म है सन्मार्ग से उन्नति करना, मज़दूर का काम है पसीने की

रोटी के आगे सोने को ठुकरा देना, चिकित्सक का कर्म है अपने वैभव को त्याग कर जन-सेवा करना। मेरा अटूट विश्वास है कि पोथियों को पढ़ने में तो हमें शायद मृगमरीचिका मिले लेकिन अपने छोटे-बड़े कामों को सत्य निष्ठा से निभाने में परमानन्द का अनुभव ज़रूर होगा।

रहा भक्ति मार्ग। तो इसमें पथिक आश्रित होता है सतगुरू का, सत्पथ को ढूंढने का, अडिग विश्वास का, असीम धैर्य का, कठोर परीक्षाओं से गुजरने का, रिक्त हाथों जीने का। सांसारिक धर्मों की उपासना पद्धतियां तो भक्ति को दुरूह बनाती हैं। यज्ञ, हवन, संध्या, व्रत, तप, योग, जाप, नमाज़, रोज़ा, तीर्थ और अबूझ साधनाएं भक्तिमार्ग को संदिग्ध व दुष्कर बनाती हैं। इस वैज्ञानिक युग में ये अव्यावहारिक भी हो चली हैं! हाँ, भक्ति में संबल तभी मिलता है जब वह सिद्धि की आकांक्षा के बिना परम तत्व में लीन होकर की जाए। 'अहम् ब्रह्मास्मि', 'शिवोहम्', 'सोहम्', 'त्वमसि', 'अनलहक़', कितनी विचित्र परिकल्पनाएं हैं परम सत्ता में समाहित होने की। मंसूर हल्लाज और कबीर को ऐसी अनुभूतियां हुईं। गोस्वामी जी ने लिखा :

'तुलसीदास चन्दन घिसैं, तिलक देत रघुबीर' (अर्थात् सैकड़ों साल गुज़र गये फिर भी चित्रकूट के घाट पर उन्हें श्री राम साक्षात् दिखायी पड़ने लगे) वे पुनः कह बैठे : 'सीय राम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी' अर्थात् समस्त चराचर जगत में यथा अशोक में, अब्दुल में, आस्कर में, अतिन्दर में सरला में, आयसा में, सूसन में, हरजीत में, माचो में, टामी में, उहेलिया में पीपल में, विन्ध्याचल में - ज़मज़म में, काबा में होनोलूलू में सर्वत्र वही एक विद्यमान है। अब सोचिये ये विभिन्नता - असमानता में जीने वाला ईर्ष्या - द्वेष में जलने वाला, अपना - पराया जपने वाला कैसे समास भक्ति में एकाग्रचित्त होकर 'माया महा ठगिनी' को पीछे छोड़ पायेगा।

चौथा रास्ता है युगधर्म का। जो जीवन को सच्चे आदर्शों पर खरा उतारेगा उसका अज्ञात परलोक भी सुधर जायेगा, यही मेरा निष्कर्ष है। 'माता

भूमि : पुत्रोहम् पृथिव्या' के उद्घोषकों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श अपनाया। 'सबै भूमि गोपाल की' मानने वालों ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' का सिद्धांत प्रचलित किया। महान् भारत की मनीषा ने विश्व को बेजोड़ दर्शन दिया। आज 'यूनान मिश्र रोमां सब मिट गये जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'। मुस्लिमों को 'लकुम दीनकुम वलईयदीन' (हमें हमारा धर्म, तुम्हे तुम्हारा धर्म मुबारक) को जीवन्त करना होगा और 'हब्बुल वतन मिनल ईमान' (देश प्रेम ही सर्वोच्च धर्म है) को साकार करना होगा। तभी 'रब्बुलआलमीन' (सारे ब्रह्माण्ड का रब) 'रहम-तुललिलआलमीन' (सारे ब्रह्माण्ड की करुणा) को तुम पर बरसायेगा। सिखों को 'सब दा भला' का मंत्र अपनाना होगा और बाबा नानक की वाणी में दुहराना होगा कि 'एक नूर ते सब जग उपजा, कौन भले कौन मन्दे'। बौद्धों को 'भवतु सब्ब मंगलम्' की कामना करनी होगी। ...... और तब सदाचार और नैतिकता का स्वप्निल राम राज्य माँ भारती की कोख से एक दिन जन्मेगा। जय भारत, जय स्वतंत्रता, जय समानता, जय भ्रातृत्व, जय मानवता जय शाँति, जय विश्वबन्धुत्व, जय एकता।

अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एन० आर० ई० सी० कॉलेज, खुर्जा

 स्मृति के शंभुकलश बूंद-बूंद रीते 

— श्याम नारायण मिश्र

बात उनकी सोचते,
मन पंखुरी सा नोचते,
दिन बहुत बीते।

बौरों के पीछे मन फुनगी तक फुदका।
अपनी ही श्वांसो से हिरनों सा बिदका।
रात - रात फिर,
टूटी कंदील सा तिमिर,
घूँट-घूँट पीते।
दिन बहुत बीते।

घड़ियों ने वर्षों के पांव किये उलटे।
घटना-संदर्भों के पृष्ठ सभी पलटे।
एक-एक क्षण दिवस,
स्मृति के शंभु-कलश,
बूंद - बूंद रीते।
दिन बहुत बीते।

जाने क्यों एक-एक लहर थमी है।
लगता है भीतर की झील जमी है।
सपने सब ढह गये,
बैठे हम रह गये,
अधरों को सीते।
दिन बहुत बीते।

कपिंग शाप, आर्डनेन्स फैक्टरी
कटनी ४८३ ५०३ (म० प्र०)
निवास – कुठला (कटनी)

कहानी —

विमाता

— के० यू० गोन्नाडे

कमलकान्त छह वर्ष का था, उसे पिता ने पाठशाला में पढ़ाई हेतु दाखिल करा दिया। अपनी स्लेट बत्ती लेकर रोज पाठशाला जाता। गुरुजी जो पढ़ाते उसे ध्यान से सुनता व उसको लिखने का प्रयत्न करता। इस प्रकार अक्षरों को लिखना आने के बाद, गुरुजी ने कहा, "कमलकान्त, अब तुम पहली कक्षा की पुस्तक लेकर पाठशाला आना?" कमलकान्त ने घर जाकर अपने पिता से कहा, "पिताजी, गुरुजी ने कहा है कि, कल से पहली कक्षा की पुस्तक लेकर स्कूल आना।" "अच्छा बेटे ठीक है, बाजार चलकर खरीद लेते हैं। थोड़ी देर के बाद चलेंगे, तू चलेगा न?" "हाँ पिताजी मैं भी चलूँगा।" वह खुश होकर नाचते हुए कहने लगा, "मैं पिताजी के साथ बाजार जाऊँगा।" पिता के साथ कमलकान्त भी बाजार गया व दुकान से पहली कक्षा की पुस्तक खरीदी। पिता ने कमलकान्त को कुछ मिठाई खरीद दी और कहा, "अपनी दीदी व छोटे भैयाओं को भी देना हाँ, अकेला नहीं खाना?" सब्जी खरीद कर दोनों घर वापस आ गये।

कमलकांत बुद्धि में तेज व होशियार था। जो भी उसे पढ़ाया जाता तुरन्त उसे लिखकर याद कर लेता। पाठशाला बन्द होने के बाद घर आकर थोड़ा देर खेलता। शाम को प्रकाश के सामने बैठकर अभ्यास करता।

उमाशंकर का विवाह होकर उसकी पत्नी त्रिवेणी देवी ने जब घर

में प्रवेश किया, उसी दिन से उमाशंकर के भाग्य चमकने लगे। वह छोटा सा किराने का धन्धा करता था। अन्य व्यापारियों से अपनी पूँजी के अनुसार किराने का सामान खरीदता था। सप्ताह में दो दिन, दूसरे गाँवों के सप्ताहिक बाजारों में, मजदूरों द्वारा काँवरी से किराने का सामान ले आता व बिक्री करता। व्यापारी से उधारी का भुगतान कर पुनः सामान खरीद करता व बेच आता। इस प्रकार दिनों-दिन उसके धन्धे में उन्नति होती गई। एक बैलों की जोड़ी, व बैलगाड़ी खरीदकर सप्ताह में चार बाजार जाकर अपना व्यापार करने लगा। धन्धा अच्छा चलने से कुछ पूँजी भी बढ़ गई। जिस व्यापारी से माल लेता था उससे कहा, "सेठजी ठीक ठीक दर लगाओ, नहीं तो अन्य व्यापारियों से माल खरीद करूँगा। सुना है, दूसरे व्यापारियों का माल अच्छा व भाव में भी कमी है?" "दरों में आपको कभी शिकायत नहीं होगी उमाशंकर, आप निश्चिन्त रहिए। इच्छित सामान एवं दर ठीक होने के कारण भी व्यापार उन्नति के पथ पर अग्रसर होता गया।

चार बच्चे व पति पत्नी, छ व्यक्तियों का संसार बड़े मौज मस्ती में चल रहा था। घर में हरदम प्रसन्नता बनी रहती थी। चारों बच्चे फूलों के समान सुन्दर। जिधर भी जाते उधर सभी लोग इन्हें देखकर प्रसन्नता भरे स्वर में कहते, "कितने सुन्दर, सुकुमार व प्यारे बच्चे हैं?" इस प्रकार आनन्दित एवं प्रसन्नता पूर्वक चलने वाला यह सुखी परिवार शायद— निसर्ग को भी इन पुष्पों के समान कोमल एवं सुन्दर बच्चों को देखकर ईर्ष्या हो गई। बच्चों के ऊपर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। कमलकांत मात्र सात वर्ष का था। उसकी माँ त्रिवेणी देवी कालेरा की बीमारी से पीड़ित होकर परलोक सिधार गई।

माँ की मृत्यु होने के बाद कुछ दिन लोगों की सहानुभूति में बीत गये। कमलकांत की बड़ी बहन यशोधरा जो कि मात्र दस वर्ष की थी,

वह स्वयं किसी भी प्रकार से कच्चा पक्का खाना बनाकर सबको देती। जब भी खाना बनाना शुरू करती, उसे माँ की याद आती व रो पड़ती। उसका रोना देखकर तीनों भाई भी रो पड़ते। इतने कम आयु में सफाई करना, पानी भरना, खाना बनाना एवं कपड़े धोना, घर का पूर्ण काम करना बहुत कठिन था। बच्चों की दयनीय स्थिति का देखकर, उमाशंकर के वृद्ध पिता ने कहा, "उमाशंकर अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं, तुम दूसरी शादी कर लो। इन छोटे-छोटे बच्चों को, जबकि इनके खेलने कूदने के दिन हैं, कितना काम करना पड़ रहा है? इनका स्वास्थ एवं बुद्धि का विकास रुक सकता है, इसका तो ख्याल करो!" नहीं हाँ, नहीं हाँ में कुछ माह बीत गये। हरदम पिता की ओर से शादी की बात होती। हररोज यही बात सुनते-सुनते उमाशंकर का मन भर गया। अन्त में शादी करने का निर्णय उमाशंकर ने कर लिया।

उमाशंकर के पिता ने अपने लड़के की आयु को ध्यान में रखते हुए एक लड़की खोज ली। रमादेवी नाम, वर्ण में गोरी, देखने में सुन्दर। उसी गाँव की किन्तु दूर मोहल्ले की थी। लड़की के पिता का नाम बता कर उमाशंकर को सारी जानकारी दी, व कहा, "जब भी मौका मिले लड़की देख लो। लड़की पसंद आने पर उसके पिता बात कर रिश्ता पक्का कर लेंगे।"

उमाशंकर के पिता ने अपने परिचित व सगे सम्बन्धियों से उमाशंकर की शादी के सम्बन्ध में बात की। लड़की के पिता का नाम रिश्ता पक्का करने हेतु कहा। उमाशंकर को किराने सामान का व्यापार करने के कारण उसे गाँव के बहुत से लोग जानते थे। शिवलाल भी उसे जानता था। सभी को जानकारी थी कि उमाशंकर को व्यापार से अच्छी आय हो रही है। खानपान में भी कोई कमी नहीं है। मकान रहनसहन सब कुछ ठीक-ठाक है। लड़की के पिता को इस प्रकार सम्पन्न घर के अतिरिक्त क्या

चाहिए ? बातचीत भी हो गई व रिश्ता भी पक्का हो गया। एक माह के अन्दर ही विवाह कर उमाशंकर दूसरी पत्नी ले आया। बच्चे उसे माँ कहने लगे। बच्चों को घर के कामों से राहत मिली। बच्चे पड़ोस में खेलने जाते तो पड़ोसी पूछते, "क्यों तुम्हारी नई माँ कैसी है ? खाना-पीना ठीक से मिल रहा है या नहीं ?" बच्चे भोलेपन से कहते, "अच्छी है, खाना भी मिल रहा है," और अपने खेल में मग्न हो जाते।

उमाशंकर दूसरी शादी करने के बाद, बच्चों के सम्बन्ध में बिलकुल निश्चिन्त हो गये। पत्नी का स्वभाव देखकर उसे आशा हो गई कि अब बच्चों का खाना पीना ठीक से चलेगा। बच्चे भी प्रसन्न रहते, स्कूल जाते अपनी पढ़ाई करते। उन्हें समय पर खाना पीना मिल जाता। घर में पुनः रौनक एवं प्रसन्नता भरे सुखमय दिन आ गये। किसी को कोई शिकायत नहीं थी। बच्चे नाज़ुक फूलों के समान मुरझाने की स्थिति में थे पुनः प्रसन्नता से खिलने लगे। व्यतीत वातावरण में संसार रूपी नौका मझधार में खड़ी थी, वह पुनः उल्लसित पथ पर अग्रसर होने लगी।

उमाशंकर सप्ताह में चार दिन दूसरे गाँवों में जाकर बाज़ार करते। वह सवेरे छः से आठ बजे के बीच में किराना सामान बैलगाड़ी में लाद-कर बिक्री हेतु बाज़ार चले जाते। दूर गाँव का बाज़ार हो तो जल्दी जाकर देरी से आते, नजदीक का हो तो देरी से जाकर जल्दी आ जाते। इस प्रकार उमाशंकर सप्ताह में तीन दिन गाँव में, तो चार दिन बाहर गाँवों में रहते। आने में रात्री के आठ नौ बज जाते। पत्नी खाना बना कर तैयार रखती। कभी-कभी सब्जी घर में न रहने के कारण दाल या बेसन बनाकर रखती। उमाशंकर बाज़ार से घर आने पर, प्रथम सब्जी के बारे में पूछते। सब्जी मनपसन्द की न हो तो नाराज हो जाते। पत्नी कहती, "देखोजी, इसमें नाराज होने की कोई बात नहीं है। जो घर में पैसा छोड़ जाते और मैं आपके पसन्द की सब्जी लाकर नहीं बनाती तो बात अलग होती। जो घर में था बना ली। बाज़ार जाने के पूर्व पैसा

दे जाओ, मैं आपके पसन्द की सब्जी खरीद कर लाऊँगी व बनाऊँगी।" "ठीक है लाओ, कुछ तो खाना पड़ेगा।" "ओहो इस तरह नाराजी में खाना मुझे अच्छा नहीं लगता।" "अच्छा बाबा, गलती मेरी ही है, आगे से मैं तुम्हारे पास कुछ पैसा छोड़ जाऊँगा, जिससे तुम जो भी आवश्यक लगे वह खरीदकर ला सकोगी।" बात करते-करते दोनों एक दूसरे को इस प्रकार देखने लगे, जैसे कभी देखा न हो। उमाशंकर ने हँसते हुए कहा, "ऐसी क्या देख रही हो ?" रमा भी हँसते हुए कुछ नहीं है कहकर चुप हो गई। "रमा कुछ बात अवश्य है ?" "बच्चों को भूख लगी है पहले खाना खाओ।" बच्चे खाना खाकर सो गए तथा उमाशंकर बिक्री का हिसाब-किताब करने लगा।

रमादेवी ने सबका भोजन होने के बाद बर्तन साफ किये व भूठन की जगह भी सफाई की। सारा काम होने पर कहा, "आज हिसाब-किताब ज्यादा हो रहा है, कोई खास बात है क्या ?" "हाँ खास ही बात समझो। दूकान बन्द करते समय अपना खास ग्राहक आ गया था। उसने कुछ उधारी दी व माल भी ले गया। वह जल्दी-जल्दी में पेंसिल मिली उसी से लिख दिया था। उसे लिखकर पूर्ण कर रहा हूँ।" अपने हिसाब की किताब रखते हुए कहा, "बस हो गया।"

रमादेवी ने सवेरे उठकर, नित्य की भाँति साफ-सफाई व कुएँ से पानी लाकर भोजन बनाना आरम्भ कर दिया। उसे जानकारी थी कि आज दूर का बाजार है, जल्दी जाएँगे। उमाशंकर ने भी उठकर बैलों को चारा पानी सवेरे ही दे दिया व नित्य कर्म में लग गये। रमादेवी का जी मचलने के कारण उसे उल्टी होने जैसी लगती। बार-बार वह वमन करने बाहर आती।

"क्या बात है रमा ? तुम बार-बार उल्टी कर रही हो ? तबियत तो ठीक है ना ?

"तबियत तो ठीक है, केवल मेरा जी मिचला रहा है, पता नहीं क्या बात है? आप चिन्ता मत कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। आप बाजार जाने की तैयारी कीजिये, नहीं तो देर हो जाएगी। भोजन बनने में देरी नहीं है। तब तक आप बैलगाड़ी में सामान लादकर नहा लीजिए।"

उमाशंकर ने किराना सामान के बण्डल बैलगाड़ी में लादकर गाड़ी तैयार की व नहाने हेतु स्नानघर चला गया। नहा धोकर पूजापाठ किया भोजन कर बैलगाड़ी जोती व बाजार हेतु रवाना हो गया।

रमादेवी ने बच्चों को तैयार कर खाना दिया। भोजन करने के बाद स्कूल भेज दिया व बर्तन साफ करने लगी। उसका पुनः जी मिचलाने लगा, उसे वमन करने की इच्छा होती। इस संबंध में किसी से भी कोई बात पड़ोस में भी नहीं की व कई दिन बीत गये। उसे अब कुछ खटमिट्टा खाने की इच्छा होने लगी। स्वयं सब्जी आदि खरीदने जाती तो कुछ न कुछ खटमिट्टे फल खरीद कर लाती व चुपके से खाती। उमाशंकर जिस दिन घर में होते तो वे स्वयं सब्जी आदि लाते। उमादेवी ने कहा, "सुनोजी मेरा जी कुछ खटमिट्टा खाना चाहता है, कुछ आम खरीद कर लाओ न?"

"ओ समझ गया, नया मेहमान आने वाला है, ठीक है लाता हूं।" उमाशंकर ने कहा व झोला लेकर बाजार गये। कुछ सब्जी ली और कुछ आम खरीदकर घर आए। "रमा ये रखो, इसमें सब्जी भी है। एक आम अलग रख देना, तुम्हारे कल के लिये हो जाएगा। अभी तुम भी खाओ व बच्चों को भी दे दो।"

"इसमें दो तीन प्रकार की सब्जियाँ है, अभी क्या बनाऊँ?"

"जो इच्छा हो वह बना लो, सब्जी अच्छी व सस्ती थी ले ली।"

रमादेवी ने दो आम काटे, बच्चों को दिए, पति को दिया व स्वयं ने भी खाए तथा एक आम अलग रख दिया।

उमाशंकर दूसरे दिन भोजन कर बाजार चले गए। रमादेवी ने सब बच्चों को खाना पीना करा दिया। स्वयं भी खाना खाकर अपने मायके चली गई।

पिता ने कहा, "बहुत दिनों के बाद आई हो, ठीक तो है ना?" करीबन दो माह के ऊपर हो गए इधर नहीं आई, तो कुछ चिन्ता भी होती थी कि हमारे यहाँ आने हेतु मना तो नही कर दिया? कभी इस प्रकार भी सोचता था कि रमा की चिन्ता थी, दूर हो गई, अपने घर में सुखी व प्रसन्न है।

"ठीक हूँ पिताजी, आपके आशीर्वाद से मैं आनन्दित एवं प्रसन्न हूँ। मुझे कोई कष्ट नही है। दो समय खाना बनाना और बच्चों व पति को भोजन करवा कर स्वयं खाना। यही नहीं, अब तो इच्छानुसार सब कुछ समय पर मिल जाता है। अब आप ही बताओ मुझे क्या दुख है?"

"ठीक है बेटी, अब मुझे कोई चिन्ता नहीं रही, ईश्वर करे तुम सदा सुखी रहो।"

रमादेवी अपनी बड़ी भाभी को मिलने अन्दर गई और कहा, "भाभी क्या चल रहा है?" "अरी रमा कुछ नही, आओ आओ बैठो। मैं तो सोच रही थी कि हमारे भाई साहब तुझे छोड़ते ही नहीं, रातदिन गोदी में लेकर बैठे रहते हैं।" "ओहो भाभी आपको तो छेड़छाड़ किये बिना मजा नही आता न?" "तो क्या मैं गलत कह रही हूं?" नहीं भाभी नहीं, बिलकुल नहीं, आप भी कभी गलत कह सकती हैं?" "खैर छोड़ यह बात। अब सच सच बता, तू कैसी है, सब ठीक ठाक है या नहीं?" "बिलकुल ठीक हूँ भाभी, कोई दुख नहीं, कष्ट नहीं, मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" "हमारे भाई साहब बड़े अच्छे आदमी हैं, तुझे कभी दुख नही दे सकते। तू भी तो चाँद से मुखड़े वाली है न, तुझे भला कौन कष्ट दे सकता है!" "भाभी, आप तो आदत से मजबूर हो।"

"अच्छा यह बता तू क्या खाएगी, पकौड़ी या हलवा, या और कुछ, जो इच्छा हो बताना, शर्माना नहीं हाँ ?"

"भाभी आप खिलाना ही चाहती है तो कुछ खटमिट्ठा मंगाओ ना ?"

प्रसन्नता से उसे चूमते हुए कहा, "ओहो रमा, मैं समझ गई, फूल खिल गया, लगता है फल रूप में नया मेहमान आने वाला है ?" रमा शर्मा गई। "अरी इसमें शर्माने की क्या बात है ? कब से है बता तो सही।"

"पिछले माह में मैं बाहर नहीं बैठी, अब दो माह हो गए हैं भाभी।"

"ठीक है, आम खाएगी या अंगूर, तुम जो कहोगी वही मंगा देती हूं, बोलना ?"

"आम तो मैं खा चुकी हूँ, अंगूर मंगाओ भाभी।" बैठो मैं अभी आई कहकर अपने बच्चे को बुलाया व पैसे देकर अंगूर लाने को कहा।

बच्चे ने बाजार से अंगूर लाकर अपनी माँ को दिया। "लो रमा खाओ मैं तब तक चाय बनाती हूं।" "भाभी आप भी खाओ ना, बाद में चाय बनाना।" "नहीं रमा तुम खाओ, तुझे इस प्रकार के फल अभी आवश्यक हैं।" कहकर चाय बनाना शुरू कर दिया। रमा ने अंगूर खाकर चाय पी व कहा, "भाभी अब मैं चलती हूँ।" "ठीक है, बीच बीच में आती रहना।" "अच्छा भाभी," कहकर चलने लगी।

"ओहो सुन सुन रमा, देख अब ज्यादा वजनी वस्तुएँ नहीं उठाना ठीक से चलना, कभी पैर आदि अनजाने में गड्ढे में नहीं गिरना चाहिए ध्यान रखना, समझी।"

"हाँ भाभी समझ गई, अच्छा अब मैं चलूँ ?" "अच्छा जा।"

रमादेवी घर आई करीबन शाम के छः बजने वाले थे। घर आँगन को झाड़ू लगाकर साफ किया व भोजन बनाना शुरू कर दिया। खाना

तैयार होने पर बच्चों को भोजन परोस दिया। बच्चे खाकर सो गए।

रमादेवी का भाई अमरलाल किसानी का काम करता था। जिस समय रमादेवी मिलने गई थी, उस समय उसकी भाभी उषादेवी ही घर में थी। अमरलाल घर में नहीं था खेत पर था। शाम को जब घर आए, आते ही उषादेवी ने कहा, "रमादेवी आई थी, वह गर्भवती है, दो माह हो गये हैं।"

"सुखी तो है न? कोई कष्ट, दुख आदि तो नहीं ना?"

"बिलकुल नहीं।" कह रही थी, "आप लोगों के आशीर्वाद से मैं बहुत प्रसन्न एवं सुखी हूँ।" "अच्छा है, साँईकृपा से वह आनन्दित रहे व संसार का परम सुख प्राप्त हो यही प्रार्थना है।"

मैंने उसे कुछ खाने को पूछा तो कहा, "भाभी मुझे कुछ खटठा खाने की इच्छा है।" उसकी इच्छानुसार मैंने अंगूर मंगवा दिए। "क्यों उसे घर में फल आदि नहीं मिलते हैं क्या?" "आप भी क्या बात करते हो जी? उसे घर में कोई कमी नहीं, जब चाहे तब उसे इच्छित वस्तुएँ मिल जाती हैं। आम खाकर आई थी। उसने अंगूर कहा, अंगूर मंगा दिया। इसका मतलब यह तो नहीं कि उसे कुछ मिलता ही नहीं?" "अच्छा बाबा ठीक है, तुम्हारी बात मान ली, अब चाय बनाकर लाओ जरा।" "अभी बनाती हूँ हाथ पैर धोओ तब तक मै चाय लाती हूँ।" चाय बनाकर दे दी व खाना बनाने में व्यस्त हो गई।

उमाशंकर बाजार से नौ बजे के करीबन घर पहुँचे। हाथ पाँव धोकर भोजन करने बैठे, तब रमादेवी ने मायके जाने की बात बताई। उमाशंकर ने पूछा, "सब लोग स्वस्थ एवं प्रसन्न तो है ना?" हाँ, मैं दो माह से नहीं गई थी, इस कारण पिताजी चिंतित थे। कह रहे थे, "मुझे तो शंका हो गई थी बेटी कि शायद यहाँ आने हेतु तुम्हें मनाई हो गई

होगी।" मैंने उन्हें सब बातें समझा दीं। सुनकर प्रसन्न हो गए। उसके बाद भाभी से मिली। वह कह रही थी, "भारी वस्तुएँ नहीं उठाना, देखकर चलना, गड्ढे में पैर आदि नहीं गिरना चाहिए, हर काम सोच समझकर करना आदि।" "ठीक तो है, तुम्हें यह सारी बातें ध्यान में रखकर ही काम करना चाहिए, जिससे कि व्यर्थ की पीड़ाओं से बचा जा सके।" भोजन कर हाथ धोया व बिक्री का हिसाब किताब मिलाया। रमादेवी ने भी भोजन कर बर्तन आदि साफ किये। करीब दस बज गये थे, दोनो ही निद्रारानी की गोद में समा गए। इस प्रकार व्यवस्थित कुछ माह बीत गए।

रमादेवी के गर्भ को नवाँ माह चल रहा था। वह शरीर से भारी हो गई, उसे घर का पूर्ण काम करना कठिन होने लगा। रमादेवी ने बेटी यशोधरा को कहा, "बेटी अब तुम्हें थोड़ा जादा काम करना पड़ेगा। मुझसे नहीं हो पाता है, मैं आराम करना चाहती हूँ। जो समझ में न आए पूछ लेना अँ?" अच्छा माँ कहकर घर का काम सम्भालना आरम्भ कर दिया। रमादेवी अब भारीपन के अतिरिक्त दर्द भी महसूस करने लगी। वह दर्द कम होने का नाम ही नहीं लेता, रोज के रोज जादा होता गया। औषधोपचार किया गया, कोई लाभ नहीं मिला, अन्त में प्रसूति हो गई। बच्चा स्वस्थ एवं सुन्दर था, किंतु क्या हो गया कुछ पता नहीं चला, सात दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो गई। रमादेवी का स्वास्य प्रसूति के कारण पहले ही कमजोर, उसमे ऊपर बच्चे की मृत्यु का दुख, वह बीमार हो गई। एक माह तक लगातार दवा करने के बाद बह स्वस्थ हो पाई। रमादेवी का दिमाग उस दुखित घटना से कुछ परिवर्तित हुआ। छोटी छोटी बातों पर बच्चों के उपर गुस्सा करती गाली देती, उनसे दुव्यवहार करती।

उमाशंकर अपने व्यापार मे मग्न थे। घर में क्या हो रहा हैइस

सम्बन्ध में अनजान थे। दो वर्षों तक कोई बच्चे के बारे में शिकायत न मिलने के कारण, इस तरफ ध्यान जाना निरर्थक ही था। वह घर के बारे में निश्चित होकर अपना पूर्व की भाँति ही कार्य करते रहे। कभी बच्चों से शिकायत मिलती तो उन्हे ही समझा कर चुप करा देते। यह व्यवहार देखकर रमादेवी को बच्चों से नफरत करने का प्रोत्साहन मिलता गया। बच्चों की तबियत खराब होती तो उनको स्नेह मिलने की जगह दुतकार मिलती। "तुझे क्या हो गया है ? अभी तो पेटभर खाना खाया फालतू नखरे कर रहा है, चल भाग।" बच्चे बिचारे रो रोकर चुप हो जाते। बच्चे अब कोई बात हुई तो पड़ोस के नरहरी चाचा को बताते। उन्हे कोई बाल बच्चा न होने के कारण, इन बच्चों पर दया आती। वे इनकी आवश्यकता की पूर्ति कर देते।

बच्चों के प्रति विमाता का घृणित व्यवहार देखकर पुनः पास पड़ोस के लोगों में चर्चा होने लगी। शामलाल ने कहा, "पहले ही मैं यह बात कह चुका हूँ कि चुपचाप देखते चलिये। आखिर यह तो विमाता है न, माता नहीं ? जो स्वयं बच्चे को जन्म देती है, वह माँ, माता ही नही, वह अपने बच्चे के लिए पूज्यनीय है। उसका हृदय संकुचित नही बहुत उदार एवं महान होता है। स्नेह के तो कहने ही क्या है, दुखित बच्चे के सर ऊपर केवल प्यार से हाथ रख दे तो व्यथा ऐसी दूर भागती है जैसे उसके उपर कड़कड़ाती हुई दामिनी गिरने वाली हो। उसकी दुतकारों में भी स्नेह भरा होता है। क्यों भई नरहरी, अब वह गुणगान करने वाली माता कहाँ गई ?"

"हाँ भई आपकी ही बात सच निकली, विमाता जो है न"

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन
क्षेत्रीय कार्यालय
पोर्ट ब्लेयर-744101 (अण्डमान)

कैसे कैसे लोग

नन्द बिलथरे

कैसे कैसे लोग यहाँ पर,
कैसे हैं संजोग यहाँ पर।
नाम संत है, कर्म कसाई।
कैसे कैसे जोग यहाँ पर।
भेषज है, रिश्वत का विष,
कैसे कैसे, योग यहां पर।
तृप्ती हेतु, देह का व्यंजन,
कैसे कैसे, भोग यहाँ पर।
रात जख्म दे, दिन मरहम,
कैसे कैसे, सोग यहाँ पर।
कुर्सी, कहीं भूख का दौरा,
कैसे कैसे, रोग यहाँ पर।

❀

नैतिकता के, कुएँ में,
शराब पड़ी है,
और सारे रहनुमा,
देश, समाज,
धर्म, संस्कृति की
चिंता में, बदमस्त,
गली, कूचे, कोठों पर,
गिरते - पड़ते,
गुहार रहे हैं—
हे राम;
कैसी संकट की,
घड़ी है !

महामंत्री
म० प्र० प्रगतिशील लेखक संघ
बालाघाट (म० प्र०)

चार

र्षि वेदव्यास के अनुसार सच्चरित्रता ही श्रेष्ठ पुरूषों की पहचान है। में श्रेष्ठ पुरूष जो आचरण या व्यवहार करते हैं, वही सदाचार अथवा लक्षण है। उनके मत से पापयोनि मनुष्य भी सदाचार का से तन-मन के बुरे संस्कारों को दबा रखने में समर्थ है।

सदाचार का स्वरूप

डा० हरिमोहन लाल श्रीवास्तव

या सदाचार के मूल तत्व तो सार्वभौम हैं, परन्तु देश-काल के में थोड़ा-सा अन्तर भी देखा जाता है। भारत में जहाँ आध्या- त पर विशेष बल दिया गया है, वहाँ पाश्चात्य देशों का विशेष तक जीवन की ओर है। सदाचार तथा उसके अंग परोपकार पर र भी एवं अच्छी आदतों के द्वारा उत्तम चरित्र पर आस्था रखते श्चात्य दृष्टिकोण मानव की स्वाभाविक या देहजन्य त्रुटियों की ओर आ है। भारत ने त्याग और तपस्या, संयम और साधना की आस्था प्रकट की है। 'सभी लोग तो बाल-ब्रह्मचारी हनुमान जी ति के नहीं हो सकते, जो सीता माता की खोज में इतने तल्लीन प्रचित हो जायँ कि विलासमग्न राक्षसी उन्हें शव-जैसी दिखाई : पाश्चात्य विचारक जीवन को भूलों की पिटारी मान कर 'पाप' हृदयता कुछ विशेष बरतते हुए भी अच्छी आदतों के लिये आग्रह हमारी अपनी मान्यता भी है — चरित्र यदि आदतों की ढेरी है भूलों की पिटारी।'

तू का कथन है — 'हमारे चरित्र हमारे आचरण के परिणाम हैं।' कहावत के अनुसार — 'चरित्र ही भाग्य है।' प्लूटार्क की धारणा

—है 'चरित्र देर तक बनी रहने वाली आदत मात्र है। 'सदाचार' को हम 'सद्गुणों का समूह' मानें। एक लेखक के अनुसार — 'सुनने के लिये तेज रहो, पर बोलने और क्रोध करने में धीमे।' भाव यह है कि दूसरों की आज्ञा मानने के लिये या उनके प्रति सहानुभूति या आदर दिखाने के लिये उनकी बात सुनने में तत्पर और विनम्र रहो, परन्तु स्वयं मितभाषी और अक्रोधी बनो। हम भी तो छोटों को प्रायः सीख देते हैं — 'देर तक सुनो और तब बोलो।'

सार्वभौम सत्य तो सर्वदा स्थापित है तथा उपदेशों की लम्बी सूची किसी भी देश ओर किसी भी साहित्य में सुलभ है, पर ढेर के ढेर ये उपदेश केवल उकताने वाले होते हैं। सदाचार के स्वरुप को स्पष्ट करने वाले कुछ चुने हुए कथन आस्तिकता पर बल देते है। सार रुप में—'सबसे प्रेम करो, और ईश्वर पर भरोसा करो, किसी के प्रति अन्याय न करो तथा अपने शत्रुओं के प्रति योग्य बनो। दूसरे शब्दों में — 'ईश्वर से डरो, न्याय करो, सत्य और योग्यता से प्रेम करो।' 'सदचार' की सीधी-सी परिभाषा है —'औरों के साथ ऐसा व्यवहार करो जैसा तुम उनसे चाहो। व्यवहार ऐसा दर्पण है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी छवि दिखाता है।

व्यक्ति का अपना चरित्र समाज की महान आशा है। सामाजिक जीवन को बनाए रखने के लिए 'सदाचार' एक बड़ा बल है, और व्यक्ति के सदगुणों में विश्वास सामाजिक मर्यादा को सभाल रखने वाली शक्ति है। कवि लावेल की दृष्टि में 'बुद्धिमान व्यक्ति भाग्य से सरलता, विनम्रता, पुरुषार्थ ओर सत्यवादिता के अतिरिक्त मांग भी क्या सकता है — वह बहुतों से सुरक्षित रहे, कुछ के द्वारा सम्मानित हो, संसार में भले ही नगण्य समझा जावे परन्तु एकान्त में आन्तरिक रूप से महान हो। व्यक्ति की इस कामना में 'शील' का सर्वोत्तम आदर्श तो निहित है ही, दुनिया का अटपटा रवैया भी भली प्रकार व्यंजित है। धूर्तता की बढ़ती के बीच व्यक्ति को चाहिए कि वह बहुतों से बचे। सरल, सात्विक जीवन बिताते हुये वह कुछ ही लोगों से सम्मान अथवा जग की नेमतों के लिए

अनुशंसा या बढ़ावा पा सकेगा, परन्तु वह स्वाभिमान में चोखा रह कर स्वयं अपनी दृष्टि में गिरा हुआ न हो!

कबीरदास जी जब बुराई देखने चले तो उन-सा बुरा कोई न मिला; पर गुरू-कृपा से विवेचन-बुद्धि ने उन्हें 'गोविन्द' से मिला दिया। बात बिल्कुल ठीक है — बुराई देखे तो आदमी अपनी देखे और इस प्रकार अच्छाई पाये, तो उसे अपने लिए सहेज रखे। कबीर तो विनम्र आध्यात्मिकता से बुरे ही बुरे थे, पर वाल्टर ह्विटमैन अक्खड़ भौतिकता के संस्कारों से अच्छे से अच्छा भी है। उसका कथन है — 'मैं बुरे से बुरे जैसा व्यक्ति हूं, परन्तु ईश्वर को को धन्यवाद है कि मैं अच्छे-से-अच्छे जैसा अच्छा हूँ।'

आदत और आचरण-अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है, जो धार्मिकता की ओर से जाने वाला सोपान है। तभी हक्सले कहते हैं — 'धार्मिक भावना व्यवहार का आधार होना चाहिये।' धर्म का तत्व भले ही बहुत गूढ़ हो – धर्मराज युधिष्ठिर भी उसे ठीक से न समझा सके हों, परन्तु धर्म का एक बड़ा अवयव सदाचार तो वहुत-छोटी-छोटी बातों में ही मिल जाता है। विल्वरफोर्स के अनुसार – 'छोटी बातों के प्रायः दुहराये जाने वाले विकल्प में ही हमारे चरित्र निश्चित होते हैं या गढ़े जाते हैं।' किसी की दृष्टि में वह 'पूर्णतः शिक्षित इच्छा शक्ति' है, तो कोई चरित्र या उदारता को अच्छाई के प्रति सुदृढ़ प्रेम और बुराई के प्रति ठोस घृणा से अधिक या भिन्न कुछ नहीं मानता। गेटे की दृष्टि में 'चरित्र ही चरित्र सृजक (सिरजनहार) हैं' और एमर्सन के अनुसार वह ऐसी रचना है, जिसे चाहे जिधर पढ़ो, उसकी वर्त्तिनी एक-सी है। कहना न होगा कि सदाचार की वर्त्तिनी सार्वकालिक और भौमिक मूल्यों की स्थापना को महत्व देती है। एमर्सन का अपना मत है कि 'चरित्र में जो कुछ भी उत्कृष्ट है, उसकी जड़ सत्य भाषण और ईमानदारी के सरल एवं बालोचित सद्गुणों में है।'

सदाचार सम्पूर्ण नैतिकता (Morality) और मानवता (Humanity) है। एक लेखक चरित्र और सदाचार के अन्तर को भली प्रकार स्पष्ट कर देता है। उसकी दृष्टि में सदाचार के साथ मानसिक प्रवृत्ति का योग 'चरित्र' है। वह कहता है — 'चरित्र दो वस्तुओं का परिणाम है — मानसिक प्रवृत्ति और अपना समय बिताने का ढंग।' यह समय बिताने का ढंग ही तो हमारा आचार व्यवहार है और कोई अपरिचित बात नहीं है। हाँ, कर्त्तव्यों के इस संसार में छोटे-छोटे कर्त्तव्यों का पालन करते हुए पवित्रता के सभी स्वरूपों को अपना कर हम चरित्र-निर्माण में समर्थ होते है। एक विचारक के अनुसार 'चरित्र यौवन और गौरव तथा झुर्रीदार त्वचा और भूरे बालों को गरिमा प्रदान करता है।' एक अन्य लेखक की दृष्टि में — 'चरित्र का पालन आसानी से किया जा सकता है, पर इसे दुबारा नहीं पाया जा सकता। बहुत प्रचलित उक्ति है — जब चरित्र खो गया, तो सब कुछ गया।' किसी ने सच ही कहा है — 'मनुष्य की ईमानदारी उसके दावों (गर्वोक्तियों) से न मापी जाकर उसके सदाचार से आँकी जाती है।' देश और विदेश में बहुतेरे लोग अवतार बाद को भले ही न मानें, पर एक अंग्रेजी विचारक ने कुछ मिलती-जुलती बात कही हैं — 'पूर्णतः चरित्रवान या सदाचारी कभी कहीं एक ही सहस्त्र वर्षों में दिखाई देता है।'

कर्त्तव्य को पूजा और श्रम में भगवान का निवास बहुतों ने माना है। इसलिए लोंगफेलो नामक अमरीकन कहया है — 'इस संसार में मनुष्य को या तो निहाई होना चाहिये या हथौड़ा' — अर्थात् वह कुछ निर्माण करे। सदाचार न तो किसी को विरासत में मिलता है, न वह धन-सम्पत्ति आदि बाह्य सुविधाओं से बनता है और न उसे किसी प्रतिभा विशेष की अपेक्षा होती है। एक लेखक के मत से 'अच्छा चरित्र प्रत्येक स्थिति में व्यक्तिगत परिश्रम का परिणाम है।' कार्लाइल की दृष्टि में मनुष्य परिस्थितियों का प्राणी नहीं है। वे कहते हैं — 'यह चरित्र है, जो परिस्थितियों में से सत्ता या अस्तित्व

का निर्माण करता है।' परिस्थितियों में कोई भी परिवर्तन सदाचार की कमी के लिये बहाना नहीं हो सकता। एक लेखक की दृष्टि में — 'जीवन का एक ही महान काम है चरित्र निर्माण।' दूसरा कहता है — 'हम सभी के पास प्रतिभा नहीं होती, परन्तु सभी को शक्ति दी गई है कि वे उदार चरित्र के बल और क्षमता को विकसित करें।'

जीवन का लक्ष्य आनन्द नहीं, सदाचार है। एक लेखक के अनुसार 'चरित्र का अन्तिम उत्कर्ष पूर्ण आन्तरिक शान्ति है।' चरित्रवान या सदाचारी को प्रसिद्धि या प्रतिष्ठा की चाह नहीं होती; वह तो अपने अन्तर की शांति या तृप्ति में मग्न रहता है। यद्यपि सदाचारी पुरुष या स्त्री अपने-आप में निष्काम कर्मयोगी हैं, तथापि समाज की स्थिति संभालने वाले सदाचारी को समाज का आदर भी मिलता ही है — यदि सब कहीं कृतघ्नता का बहुमत न बन गया हो। एक विद्वान की दृष्टि में — 'मनुष्य का आचार तो वास्तविकता है, जो उसके अन्तर में निहित रहती है। उसकी प्रसिद्धि तो वह धारणा है, जो दूसरे उसके विषय में बनाते हैं। एक अन्य विचारक का कथन है — 'सदाचार का निवास व्यक्ति में है और प्रसिद्धि का दूसरे लोगों में — एक पदार्थ है और दूसरी उसकी छाया।' इसी प्रकार एक उक्ति में दुराचार को बढ़िया से बढ़िया आभूषण को कीचड़ से भी अधिक बिगाड़ने वाला कहा गया है।'

निष्कर्ष रूप में मानव की देहजन्य दुर्बलताओं का ध्यान रखते हुए ईसाई धर्म 'दया' पर विशेष बल देता है और पाप के पछतावे का अपना महत्व मानता है। अतः उसने सेवा को धर्म और सदाचार का मूल मंत्र स्वीकार किया है। एक अंग्रेज का कथन है — 'चरित्र एक ऐसा हीरा है, जो पत्थर पर खरौंच बनाता है।' चरित्र की पूर्णता का कहीं अन्त नहीं। अँग्रेजी में 'चरित्र और आचार' की शब्दावली प्रायः साथ ही चलती है। चरित्रवान या सदाचारी सफलता के बिना भी प्रतीक्षा कर सकता है, परन्तु वह असफलता के विरुद्ध आत्मरक्षा में भी समर्थ होता है।

परोपकार निश्चित रूप से सदाचार का प्रथम सोपान है। अतः ए आंग्ल कवि की उक्ति-'बिन्दु में सिन्धु' के समान समस्त सदाचार का सार का जा सकती है — 'भरसक भरपूर भलाई करो-सभी प्रकार, सभी स्थानों में, सभ समय, सब लोगों के प्रति-जब तक भी तुमसे करते बने।' विदेश की बात त राम जाने, पर धर्मप्राण भारत में तो नैतिकता के अवमूल्यन के साथ सदाच का विरोधी 'स्वार्थ' उत्कर्ष पर है। कब आयेगा वह समय, जब हमारे नवयुव चुनौतियों का सामना करना चाहेंगे ?

[मनन मंजूषा से]

16, वर्माजी वाली गली
दतिया (म० प्र०)

लघुकथा

डर

— डॉ० सतीशराज पुष्करणा

एक बच्चे ने अपने पापा से पूछा, "पापा ... पापा ! यह अपना टामी है न ... दिनभर तो सोया रहता ही है ... रात में भी खाकर थोड़ा बहुत घूम-घामकर सो जाता है। ... अब यह पहले की तरह से रात को भौंकता भी नहीं है। .. क्या बात है ?"

"बेटे ! अब यह बूढ़ा हो गया है। अब इसमें इतनी शक्ति नहीं रही कि वह पहले की तरह से रातभर पहरा दे सके।"

तब इसे पालने से क्या फायदा है। पापा ? इसे निकालकर कोई दूसरा कुत्ता ले आइए। ..."

"नहीं ! नहीं !!"

दरअसल बेटे की बात सुनकर पापा को अपने माता-पिता को गांव भेज देने का स्मरण हो आया और वह अपने भविष्य के प्रति सोचकर एकाएक सिहर गया।

न्यू बजाज ऑटो पार्ट्स,
रेलवे रोड, थाना के सामने,
मेरठ शहर - 250 002 (उ० प्र०)

कसमें हजार तुम खाते हो।

— नीलकण्ठ

हर साल तिरंगे के नीचे,
तुम बचन सदा दे जाते हो;

कसमें हजार तुम खाते हो,
पर निभा नहीं वह पाते हो।

हर साल समय के पन्नो पर,
मैं गीत यही लिख जाता हूँ;
कसमें हजार तुम खाते हो,
पर निभा नही वह पाते हो।

तुम शपथ सदा गंगा की ले,
तुम कसम हिमाला की खाते।
हर रोज पुराने रिश्तों के,
तुम गीत विरासत के गाते।

भारत की जनता के आगे,
तुम शपथ नई दुहराते हो।
पर निभा नहीं वह पाते हो।

मैया माटी! कहने को अब,
बातें मेरी कुछ शेष नहीं,
जो कहा सुना वो दफन किया,
मेरे कहने में खोट कहीं,
मज़हब की मीनारों बैठे,

तुम नई अजान सुनाते हो।
मन्दिर–मसजिद में बैठे तुम,
नफरत का जहर पिलाते हो।

कसमें हजार तुम खाते हो।
पर निभा नहीं वह पाते हो।

भारत – भारत कहते - कहते,
तुम भूल गए हो भारत को।
जिस माँ ने तुमको जनम दिया,
तुम विसर गए उस भारत को।
तुम राम-कृष्ण के वंशज हो,
झूठी कसमें क्यों खाते हो ?

कसमें हजार तुम खाते हो,
पर निभा नहीं वह पाते हो।

गीता - कुरान, गुरू - ग्रन्थों के,
बाइबिल के सबक पढ़े तुमने;
पुरखों ने बात बताई जो,
सब बातें सही सुनी तुमने।

स्वारथ की गलियों में जाकर,
तुम पाठ भूल वह जाते हो।

सालों आजादी का परचम,
सुन-सुन कर मन बेहाल हुआ।
इक जशन मना, इक सपन सजा,
मन मेरा माला माल हुआ।

रंगीन सियासत की हाला,
मतवाले हो पी जाते हो।

हास्य-व्यंग्य

चिक चिक चिक

डॉ० प्रसाद 'निष्काम'

……एक उल्टी औलाद की लात खाने पहुँचा, तो कमबख्त वह मेरी कमर पर लात मारने के लिए कतई तैयार न था, क्योंकि मैं उस लौंडे का ताऊ श्री जो लगता था। थक हार कर अपनी ही उल्टी साली की लात खानी पड़ी। दूसरी बार दस रुपये देकर अपने सगे भानजे की लात खाई। तीसरी बार धर्म निरपेक्ष होकर एक चिकवे कसाई की लात खाकर मेरी चिक बैठी। अब तो गॉड फादर से यही प्रार्थना है कि बुढ़ापे में ही सही, एक उल्टी औलाद मुझे भी दे दे, ताकि उसकी लात खाकर रोज-रोज की यह चिकाई खत्म हो, अन्यथा जमाने भर की लात ………..।

चिक का सौंदर्य बोध चिलमन या पर्दा। पर्दा चिक उठाकर छोटे मियाँ अन्दर, और बड़े मियाँ बाहर के बाहर। फिर भी चिक या पर्दा के भीतर ताक-झाँक की ललक किसमें नहीं होती? भले ही चिक के पीछे कोई सठियाई हुई खाला जान ही क्यों न हों। बाँस की रंगीन खपचियों से सिली-बुनी चिक के पीछे क्या-क्या राज़ नहीं होते? चिक / पर्दे में जर्दा भी होता है। चिक के साथ अगर चाक भी जुड़ जाये, तो चिक-चाक अर्थात चमक-दमक या चकाचौंध के क्या कहने? पर्दे के भीतर कोई भी सरकार क्यों न बैठी हो, चिक उठाकर चिक-चाक लोग बेखटके अन्दर हो लेते हैं, पर्दे के पीछे उनकी गोट फिट, पक्ष-विपक्ष में अपने नेता और

बिरादरी, कोइ नृप होय, हमहि का हानी, अदल-बदल के अपने ही सा चाचा-ताऊ-मौसिया का हरम जो ठहरा, फिर ऐसे हरम में जनख ख्वाज सराओं का आवागमन आपत्ति रहित न हो तो क्या गैरों के लिए होगा किसी एसे-वैसे ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे की क्या मज़ाल कि चिक उठाकर बेधड़ अन्दर हो। ऐसी हरकत पर अगर किसी की चिक चली जाए, तो क्य आश्चर्य? चिक उठाते ही चिक चली जाए, तो और भी खतरनाक है।

चिक चली गई कमर में उफ। ऊपर की सांस ऊपर और नी की सांस नीचे। ज़रा भी हिले-डुले या आगे-पीछे झुके, तनक खड़े हुए या उठे-बैठे कि चिक गई और आह-ओफ हो, जान निकल गई हाथी जैसा लहीम-सहीम शरीर और कहाँ यह कम्बख्त बारीक चिक····· आफत है आफत। एक बार चलते-फिरते ऊँच-नीच पैर पड़ जाने य अचानक दौड़-भाग व बोझ उठाने में एक बार चिक गई, तो फिर बार बार जाने-सताने और तड़पाने लगती है, ऐसी कि कोई आशिक भी क्य तड़पेगा? आशिक की चिक या पर्दे की तड़प और किसी की कमर क नस इधर से उधर हो जाने वाली चिक की तड़प में जमीन-आसमान क अन्तर है, बड़े-बड़े हाथी बैठ जाते हैं, हिरन भी चोकड़ी भरना भूल जाते हैं। दुश्मन की कमर भले ही आप न तोड़ पाये, लेकिन बतौर खुदाई कहर उसकी कमर में चिक मार दें, तो ......?

बहरहाल, हमें पहली चिक खेल के मैदान में तब गई जब हम हेड शाट से गोल में फुटबाल मारने की कोशिश में ऐसे धराशायी हुए कि गोल हो जाने के बाद भी उठ न पाए। सारा इतिहास ही उल्टे सिरे घूम गया। हमारी समझ में अब आया कि चिक के मारे बड़े-बड़े योद्धा और सूरमा, यहाँ तक कि हाथी, घोड़े और ऊँट भी जंगे मैदान में ऐसे गिरे कि फिर उठ नहीं पाये। याद कीजिए, पोरस को बन्दी बनाने में सिकन्दर की क्या बहादुरी थी, कुछ भी तो नहीं। यूँ कहिये कि पोरस

के हाथी की कमर में अचानक चिक चली गई, वह बैठ गया, तो उठने की कोशिश में चिंघाड़ते - चिंघाड़ते उसकी नानी मर गई, उठ भी न पाया तभी सिकन्दर को मौका मिला, और उसने पोरस / पर्वतेश्वर को आनन-फानन में बन्दी बना लिया। आगे भी दिमाग दौड़ाइये, लेकिन सम्हलकर इतिहास की इस बेबाक गवाही पर आपको भी चिक न चली जाए। वही पोरस सिकन्दर के भरे दरबार में जब शेरों की तरह दहाड़ा, तो सिंहासन पर बैठे-बिठाए सिकन्दर की कमर में ऐसी अच्छी खासी चिक चली गई कि उसने पोरस को तुरन्त रिहाकर दिया। चन्द्रगुप्त मौर्य के विरुद्ध लड़ते समय सिकन्दर को दोबारा फिर ऐसी चिक गई कि वह उसी दर्द, चिलक और टीस में भारत छोड़कर यूनान तक भी न पहुंच पाया बेचारा बेबीलोन में ही मर गया, और इतिहास की अगली चिक झेलने के लिये अपने सेनापति सेल्यूकस को यहीं छोड़ गया। आखिर उसने भी चाणक्य की चिक खाकर अपनी बेटी हेलन सम्राट चन्द्रगुप्त को ब्याह दी।

अलबत्ता मोहम्मद गोरी इतना बेशर्म और बेहया निकला कि बार-बार सत्रह बार चिक खाकर भी इतिहास की इसी गली से गुज़रा। चिक भी शायद बेहया लोगों पर तरस खाती है, काश, और भी तमाम विदेशी हमलावर और लुटेरों की कमर में यह बारीक चिक बराबर जाती रहती, तो हमारे देश का नक्शा ही बुलन्द होता। चिक को भी अक्ल आई, तो तब जब देश का नक्शा ही कट-छँट गया। देश के भेदियों और अलगाव-वादियों यहाँ तक कि आतंकवादियों को भी चिक जाती रहे, तो सारी बारूद, विस्फोटक और ए० के० एसाल्ट 47 भी धरी रह जाएगी। पाकिस्तानी हमलावरों की कमर में तो यह चिक बार-बार गई है, फिर भी रस्सी जल गई मगर एंठन नहीं गई। हो न हो, खुदा के फज़ल से इस बार ऐसी चिक चली जाए कि नापाक इरादों की कमर हमेशा-हमेशा के लिए भले ही न टूटे मगर हज़ारों साल तक कसक न जाए।

दूरदर्शन सेट पर महाभारत में कुरुक्षेत्र पुनश्च चक्रव्यूह में एक साथ सात महारथियों की युद्धनीति-विरोधी कायरतापूर्ण मार प्रहार अकेले ही झेलता हुआ अभिमन्यु जरूर देखा होगा। न जाने उसके ताऊश्री युधिष्टिर और भीम सहित चाचा श्री नकुल और सहदेव की कमर में ऐसी कौन सी चिक चली गई थी कि वे लोग अभिमन्यु की रक्षा के लिए समय रहते तो क्या आखिर तक चक्रव्यूह में न पहुँच पाए। काश, यही चिक उन सात अधर्मी हत्यारों की कमर में चली जाती, तो उनके तीर धनुष, तलवार, भाले और गदे धरे रह जाते, फिर तो चिक का तीर खाए हुये अपनी कमर थाम कर आह-उफ-ओ-उफ करते रह जाते। आयोडेक्स मलिए, काम पर चलिये जैसा कोई बाम-वाम भी ईजाद नहीं हुआ था। उन दिनों यह ससुरी सुश्री चिक भी अच्छे भले लोगों को खूब पहचानती है। सुश्री का अपभ्रंश ससुरी गाली नहीं है, आदर भाव से चिक को सुश्री अर्थात मिस तो कहना ही पड़ेगा, कौन जाने कहाँ मारे कहाँ उजाड़े। देखिए न, पाण्डवों के चली गई, लेकिन कौरवों से दूर रही। हाँ गई तो एक बार सिर्फ दुःशासन के, जब वह द्रोपदी का चीर खींच रहा था। ऐन मौके पर अगर उसे चिक न गई होती, तो ... इसे कृष्ण की कृपा कहें, या ससुरी चिक का कमाल।

आप भी कहेंगे, क्या चिक-चिक लगा रखी है? शायद आपको चिक कभी गई ही नहीं, गई होती तो आप चिक की शान में ... ... खुदा खैर करे ... ... कमर पर हाथ रखकर बमुश्किल उठ पाते, उठ जाते तो बैठने के लिये तरसते, बैठकर किसी तरह लेट पाते, लेट जाते तो करवट न ले पाते, करवट बदलते तो हाथी की तरह चिंघाड़ते। आयोडेक्स वायोडक्स जैसे पेन बाम और दवा-दारू सब बेकार और बेअसर। हाँ दारू हो, तो पीकर श्री श्री बी० डी० शर्मा के पास चले जाइये; पूरी बोतल दारू सबसे पहले उनकी हलक के नीचे उतार दीजिए, फिर तैयार होकर

खड़े हो जाइये। तब बी० डी० की पीठ से पीठ मिलाकर अपने दोनों हाथ पीठ पीछे उनके हाथों फँसाकर जैसे वह झुलाएँ, वैसे झूलते जाइये। आह-उफ-ओफ्फ ··· चिक उतर गई, नहीं तो चिक की चिकवे जैसी मार झेलते रहिये, कभी तो उतरेगी।

एक बार रामबाण का टुटका और, छुटकारा पाना ही चाहते हैं, अपने पास-पड़ोस, गली, मोहल्ले और पूरे शहर में किसी उल्टे पैदा हुए व्यक्ति नारी या पुरूष की तलाश कीजिये, उल्टी औलाद के पैर माँ के पेट से पहले ही निकलते हैं, उसे विष्णुपद भी कहा जाता है। किसी ऐसे ही विष्णुपद या विष्णुपदी से अपनी कमर में लात मरवा लीजिए। सगे माँ-बाप और गुरू की लात भले ही न खाये हों, लेकिन ससुरी चिक के मामले में यह तुर्रा भूलकर उल्टे लोग-लोगाइयों की लातें खाते फिरिये। मैं तो यही कहूँगा, भगवान अपने जिस प्राणप्रिय भक्त का घमंड चूर करना चाहता है, उसे चिक मार देता है, जैसे मोहिनी ने नारद के चिक मार दी।

आप बीती कहूँ, तो मुझे चौथी बार फिर चिकवे जैसी बेरहम जान मारू चिक गई है। पहली बार जब एक उल्टी औलाद की लात खाने पहुँचा, तो वह कमबख्त मेरी कमर में लात मारने के लिए कतई तैयार न था, क्योंकि मैं उस लौंडे का ताऊश्री जो लगता था। हमें भी झेंप लग रही थी, आखिर थक हारकर अपनी ही उल्टी विष्णुपदी साली की लात खानी पड़ी। दूसरी बार दस रुपये देकर अपने सगे भानजे की लात खाई। तीसरी बार धर्म-निरपेक्ष होकर एक चिकवे कसाई की लात खाकर मेरी चिक बैठी। अब तो गाड फादर से यही प्रार्थना है कि बुढ़ापे में ही सही (यदि परिवार नियोजन वाले मुआफ करें) एक उल्टी औलाद मुझे भी दे दे, ताकि उसकी लात खाकर रोज-रोज की यह चिकाई खत्म हो, अन्यथा जमाने भर की लात कहाँ तक खाता फिरूँगा? वैसे तो

परिवार नियोजन के हित में यही होता कि मैं खुद ही उल्टा विष्णुपद हुआ होता। पता नहीं, उस हालत में मेरी चिक जाती या नहीं। यह तो उल्टे पैदा हुए लोग ही जाने। यह तो तय है कि जिनकी लात खा कर चिक उतर जाती हो, उनके क्या जाएगी भला? और अगर चली भी गई, तो उन्हें उल्टे आदमियों की लात का क्या असर होगा! मैं समझता हूँ, ऐसे उल्टे पुल्टे लोगों को फिर तो सीधे आदमियों की लात खानी पड़ेगी।

अब आप ही बताइये, चिक आई (चिकाई) या गई? चिक गई थाने चली गई, तो फिर क्या तकलीफ है?

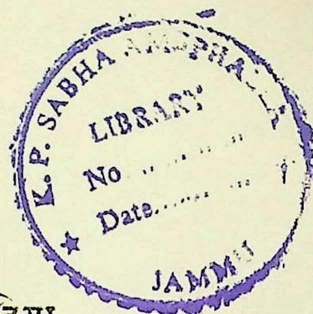
2-बी, न्यु सरस्वती नगर,
बल्केश्वर मंदिर रोड, आगरा-282004,

"थकान"

डॉ० सरोज अग्रवाल

जीवन के निरन्तर वेदनामय झरनों से
झरते – झरते मैं गया थक,
विश्राम करना झरने के
नेचर में नहीं होता है।
पर, सोचता हूँ कभी-कभी
विश्राम करना चाहिए
लेकिन, सिद्धान्ततः विश्राम
मेरी मौत ही होगी।
अतः मैं निर्जीव न बनकर
केवल सजीव, सप्राण ही बनना
पसन्द करता हूँ।
इसीलिए, तो विश्राम न कर भी
निरन्तर चलता रहता हूँ।

मानिक चौक, मथुरा
284001 (उ० प्र०)



दिवाली का दिया

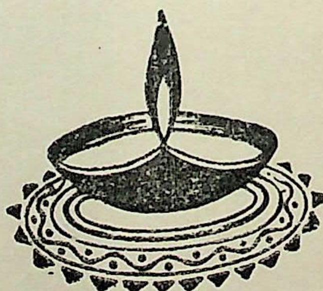
— बशीर अहमद मयूख

समय के आसुरी रावण ने लछमन-रेख लाँघी है,
कि मर्यादा की सीता को किसी ने फिर चुराया है,
हमें संघर्ष करना है तिमिर के हर दशानन से,
दिवाली का दिया जलकर यही संदेश लाया है।

कि जिनके कारनामों से हिमालय हो गया नंगा,
कि जिनके पाप धोने से करे इन्कार है गंगा,
उन्हें अभिशाप देता है तपस्या-लीन दंडक वन,
कि फिर होगा असुर-मर्दन, लिखी जायेगी रामायण।

अशोका वन से सीता को छुड़ाकर राम लायेंगे,
दिवाली के दिये हम देशवासी फिर जलायेंगे।

2–छ-17, विज्ञान नगर कोटा-5



समीक्षा—

कवि ईश्वरी प्रसाद गौड़ का कविता संसार

— मदन 'मोहन' उपेन्द्र

सागर के बीच तैरते द्वीपों की धरती से अहिंदी भाषी वातावर में हिन्दी कविता की अलख जगाने वाले कवि ईश्वरी प्रसाद गौड़ का रचन संसार अपने आप में अद्वितीय है। यों कवि के चार-पाँच कविता संग्र प्रकाशित हो चुके हैं किंतु मात्र दो कविता संग्रह यथा– 'जाग उठे गीत और 'चश्मदीद गवाह है यह' पढ़ने का अवसर पाकर कवि की सम्पूण काव्य संवेदना में डूबने का अवसर मिला। यद्यपि 'जाग उठे गीत' क प्रकाशन 1982 में हुआ था और इस वर्ष उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशि होना संग्रह की लोकप्रियता का परिचायक है। संग्रह के गीत इतने संवेदन शील हैं कि पाठक में विरह मिलन की वेदनाओं की साकार अभिव्यक्ति से सरबोर कर देते हैं। यथा— सांझ सकारे मन के द्वारे

रह रह कौन पुकारे

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आधी रात गुजर जाने पर
कोई स्वप्न जगा जाता है।

उक्त पंक्तियाँ पाठक की हृदय तंत्री को झंकृत करने के लिये पर्याप्त हैं इतना ही नहीं कवि ने प्रकृति और मौसम को अपने गीतों में सहज रूप में अलंकृत किया है। यथा—

पीपल की छाँव तले

झूमती बयार चले
हियरा में उठती है टीस
ऐसे में आ जाये मन का रे मीत

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

काले मेघा बरसो रे
बरसो रे मन तरसो रे

★ ★ ★ ★ ★ ★

जीवन में अंगार न दो
चाहे मुझको प्यार न दो।

आदि पंक्तियों में कवि ने सहज भारतीयता की परिपाटी को अभिव्यक्त करते हुये हिन्दी क्षेत्र की— सौंधी माटी की गंध को महकाया है।

यों संग्रह की प्रथम पंक्ति 'अनजाने अधरों पर जाग उठे गीत' और अन्तिम पंक्ति मेरा है अपराध यही मैं गाता हूँ' है। और इसके बीच सम्पूर्ण संग्रह की हर पंक्ति माला के मोतियों की तरह संग्रह के हर गीत में जड़ी हुई है। जिसके लिये कवि गौड़ निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

इसी क्रम में कविवर ईश्वरी प्रसाद गौड़ का हाल ही में प्रकाशित कविता संग्रह "चश्मदीद गवाह है यह" प्रकाशित हुआ है जो प्रयाग शुक्ल मंगलेश डबराल आदि को समर्पित है। यह संग्रह जहाँ एक ओर समकालीन बोध की अधुनातन कविताओं से सम्पृक्त है वहीं भारतीय द्वीपों की दस्तावेजी गाथाओं को काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत करता है।

प्यारा अंडमान हमारा छोटा हिन्दुस्तान
सागर रंग अनेक

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

बड़ा ही हठीला बड़ा ही रंगीला
ये अंडमान सागर,

रॉस द्वीप इनके अतिरिक्त छोटी-छोटी कविताओं में रॉस द्वीप सैल्यूलर कारागार की अनजान कथाओं को जन-जन के लिये सुलभ बनाया है। जो कविवर गौड़ की चमत्कार पूर्ण काव्य शैली का परिचायक है।

इसके अतिरिक्त इसी संग्रह में उत्तर प्रदेश की लोकधुन पर ऐसे लोकगीत प्रस्तुत किये गये हैं जिन्हें पढ़ते-पढ़ते पाठक सौंधी माटी की गंध में झूमकर खो जाने को विवश हो जाता है।

'मोकू ला दे चुनरी', 'होली कैसे खेलूँ रे', 'झूला झूले जोवना' आदि पंक्तियाँ लोकगीतों की बानगी की पहचान के लिये पर्याप्त हैं।

काव्य भाषा विम्ब योजना संवेदनशील रस योजना की सम्पूर्ण पहचान के कवि ईश्वरी प्रसाद गौड़ अपनी काव्यधारा में इतने सशक्त हैं और उनका लेखन इतना विकासवान है कि उनसे अभी और भी अच्छी कृतियों की अपेक्षा है

शत शत बधाई।

अध्यक्ष, हिन्दी प्रचार सभा
ऐ-१०, शांति नगर, मथुरा (उ० प्र०)

किसके लिए ?

गीत — श्रीकान्त प्रसाद सिंह

मैं आज तक
जलता रहा,
किसके लिए,
किसके लिए ?

इतना दरद,
इतनी जलन,
इतनी तड़प,
इतनी घुटन !

मैं आज तक
सहता रहा,
किसके लिए ?
किसके लिए ?

पथ की
अँधेरी रात में,
काँटे मिले
सौगात में !

फिर भी कदम
बढ़ता रहा,
किसके लिए ?
किसके लिए ?

छलता रहा
निर्मम प्रणय,
जलता रहा
मधुमय हृदय !

मैं दाह में
पलता रहा,
किसके लिए ?
किसके लिए ?

इतनी घृणा,
इतनी चुभन,
रोता रहा
पल-पल मिलन !

मैं विरह में
हँसता रहा,
किसके लिए ?
किसके लिए ?

ग्राम डाकघर – बड़हिया
जिला – मुंगेर (बिहार)

"द्वीप दर्पण"

एक विवेचन — डॉ० ब्रह्मस्वरूप शर्मा, डी० लिट्

'द्वीप दर्पण' ऐतिहासिक वृत्तांत की काव्यात्मक प्रस्तुति है। कवि आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज' ने अंदमान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को सुव्यवस्थित रागात्मक स्वरूप देते हुए इस कृति के माध्यम से देश प्रेम की भावना को उभारा है। ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा के साथ मानवीय संवेदनाओं का उभार कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। इतिहास की इतिवृत्तात्मकता को जीवन की गतिशीलता में संवेदनात्मक प्रस्तुति निपुण कवि के काव्य कौशल द्वारा ही संभव है। कवि 'सरोज' आधुनिकता की गहमागहमी से दूर जीवन की सरसता और सहजता के खोजी कवि हैं। माधुर्य उनका उपास्य है और साधनापथ भी। 'काला पानी' की क्रूर कथा को जीवन की निरंतरता में गहराने के लिए कवि ने जहाँ अतिवाद से परहेज किया है वहाँ वास्तव के प्रति सतर्कता भी बरती है। कृति में प्रस्तुत घटनाएं तथ्यों पर आधारित हैं और उनमें कहीं भी अतिरंजन नहीं है। यों कृति में अंदमान की पृष्ठभूमि और परिवेश का चित्रण व्यापकता से प्रस्तुत किया गया है किंतु कवि की सहानुभूति स्वतंत्रता आराधक देशभक्तों द्वारा सेल्युलर जेल में भोगी पीड़ा के प्रति ही अधिक है। विवाद से बचते हुए कवि ने इन स्थलों को बड़ी मार्मिकता से उभारा है:

"छह कोड़े तक कैदी अफसर इनको सकता मार था
और बड़े अफसर के कुछ ना अधिकारों का पार था.. ..." (पृ०27)
"काँजी मिट्टी तेल मिली कच्ची जली रोटियां थीं
पानी पानी दाल तरकारी घास पात की......" (पृ०37)

"जगह घोड़ों की बंदी गाड़ियों में जोते जाते थे
निरंतर यातना से चेतना को खोते जाते थे......" (37)

ऐतिहासिक तथ्यों को एकत्रित करने में निसंदेह कवि ने श्लाघनीय प्रयास किया है और उन्हें विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए संयम का परिचय भी दिया है। 'वाकर' की क्रूरता और 'हाटन' की अमनप्रियता के प्रसंग से कवि की संतुलित दृष्टि का परिचय मिलता है (13)। दूधनाथ तिवारी और शेरअली प्रसंगों को कवि ने बिना किसी पूर्वाग्रह के यथातथ्य रूप में प्रस्तुत किया है और यथातथ्य चित्रण पूरे परिवेश को ही विश्वसनीय बना देता है। प्रायः ऐसे स्थलों को उभारने में कवि और लेखक विश्वासनीयता बनाए रखने में सफल नहीं हो पाते हैं। जापानी शासनकाल की घटनाओं को भी कवि ने तथ्यों की उपलब्धियों के प्रकाश में ही प्रस्तुत किया और ये तथ्य निश्चय ही उसने खोजी आग्रह से एकत्रित किये हैं।

"एक मुर्गी उठा सैनिक ले चला (45)
खून जे० के० अली का इससे जला"

"मना किया तो पीठ पर थी डण्डों की मार
जानें तक ले ली गयीं था निर्दय व्यवहार" (47)

"मोम की बत्ती जला जननेन्द्रियों
को प्रतिशोध लिया करते थे (49)

इतिहास घटनाओं की इतिवृत्तात्मक प्रस्तुति ही नहीं है अपितु सामाजिक जीवन को गतिशीलता प्रदान करने वाली चेतना भी है। इस ऐतिहासिक बोध से कवि सामाजिक जीवन में उन मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है जो व्यक्ति-जीवन को भव्य से भव्यतर बनाती हैं। कवि 'सरोज' ने अंदमान के इतिहास को प्रस्तुत करते हुए सामयिक घटनाओं के अवसान में प्रत्यक्ष या परोक्ष में ऐसे मूल्यों को उभारा है जो हमें जातीय जागरण के लिए प्रेरित करते हैं। 'जय सुभाष' (54) कृति अंश में कवि ने "मैं दूँगा तुमको आजादी

तुम करो समर्पित मुझे रक्त" शब्दावलि द्वारा सुभाष के कृतित्व को पुर्नप्रतिष्ठित करते हुए 'स्वतंत्रता उपासना' को एक मानवीय मूल्य के रूप में उभारा है। स्वतंत्रता उत्सर्ग चाहती है और उत्सर्ग उच्चतर मानवीय मूल्यों की उपासना द्वारा ही संभव है। 'पट परिवर्तन' (58) 'सत्ता समर्पण' (59) और 'सूर्योदय' (60–61) प्रसंगों में कवि ने उत्सर्ग द्वारा प्राप्त उपलब्धियों को दर्शाते हुए राजनीतिक व्यवस्था हेतु स्वस्थ स्वतंत्रता चेतना को साग्रह गहराया है। अव्यवस्था की व्यवस्था में परिणिति ही राजनीतिक कर्म की सफलता है, कृति के अंत में यही ध्वनि गुँजित है।

कवि ने ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से सामाजिक राजनीतिक जीवन स्थितियों पर भी प्रकाश डाला है।

"था अमन घर में न घर की बाट में
पिस रही जनता थी दुहरे पाट में" (46)

"बाबू पत्थर तोड़ते शिक्षक ढोते माल
सेठ लकड़ियां काटते था जी का जंजाल" (48)

"चीनी चावल पास न अपने कोई रख पाता था
बोरों और टाट से केवल तन को ढक पाता था" (57)

ऐसे प्रसंगों द्वारा कवि ने जहाँ काले दिनों की क्रूरता को व्यक्त किया है वहाँ 'सूर्योदय' (60–61) प्रसंग में कवि ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आये परिवर्तनों का सविस्तार उल्लेख किया है।

"भारत के हर कोने से हर प्रांत से
लोग बसे हैं आकर निर्भय शांत से" (60)

"सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियां हैं
पर्व-उत्सवों की बहुरंगी छवियां हैं" (61)

उपर्युक्त टिप्पणियाँ कालापानी की कल्पना को ही अविश्वासनीय बना देती हैं। आज के पोर्ट ब्लेयर को देखकर यह विश्वास करना कठिन है कि कभी यहाँ बंदी जनों ने अमानुषिक जीवन बिताया होगा। कवि ने अतीत और वर्तमान के सामाजिक जीवन में राजनीतिक स्थितियों का चित्रण करते हुए मानव-जीवन को समझने की सूझ दी है। राजनीतिक उथल-पुथल, अराजकता, युद्ध और उत्पात के झंझावातों में भी जीवन का प्रवाह थमता नहीं, यही सृष्टि का विधान है। कवि ने घटनाओं के विवरण में समय-समय पर जीवन की गंभीर मीमांसा की है।

"वैराग्य राग निर्माण ध्वंस
अगणित इसके शुभ अशुभ अंश
जिनसे जीवन का जटिल चक्र
गतिमान अविरल सम विषम वक्र (14-15)

विषमताओं से जूझना ही कुछ मानवों की नियति बन जाती है। इस नियति को स्वतंत्रता-सेवी सहज स्वीकार कर लेते है। वीर सावरकर जैसे देश भक्त साहस के बल पर भीषण से भीषण बाधा को भी तुच्छ बना देते हैं (42) कवि ने ऐसे प्रसंगों द्वारा जीवन को गंभीर अर्थ प्रदान किया है।

कृति में द्वीपीय प्राकृतिक सौंदर्य का मोहक चित्रण है। अंदमान निकोबार द्वीप समूह अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण देशी और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। वनाच्छादित छोटे-बड़े द्वीप, सागर तट, पर्वत घाटियां और उत्ताल तरंगें मन को सहज ही भावुकता से विभोर कर देती है। कवि 'सरोज' प्रकृति के चितेरे कवि हैं। अपनी मुक्तक कविताओं में भी कवि ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। आलोच्य कृति में यद्यपि पोर्ट ब्लेयर के आसपास की धरती ही अधिक मुखरित हुई है तथापि यह प्रस्तुति सम्पूर्ण द्वीपीय सौंदर्य का बोध कराने में समर्थ है। 'नैसर्गिक सौंदर्य' प्रसंग में कविने प्रांजल भाषा में प्राकृतिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की है। 'प्राकृतिक हाट' की झांकियां देखते ही बनती हैं।

"पादप शतावरी सुमन विविध कदली पुंगीफल नारिकेल
चहुँदिशि हरीतिमा कुंज पुंज प्रसरित तरु तरु पर तरुण बेल"

"झंझावाती झर झर वर्षा और कभी प्रखरतम प्रबल धूप
निशि विमल चन्द्रिका सुखद अनिल रवि उदय अस्त बेला अनूप"

कवि की सौंदर्यासक्ति विवरणात्मकता को भी ग्राह्य बना देती है —

"वन गहनविपिन मैंग्रोव, धूम, कोको, दीदू, चुगलम पड़ाक
गर्जन, मार्बल, बादाम, टीक, सैटिन, काष्टाच्छादित अवाक"

"वन प्रान्तर में कल क्रीड़ा रत शूकर, मृग, मेगापाड मोर
मनहरण हार्नबिल नीलकण्ठ जल थल चारी घड़ियाल घोर"

कृति के माध्यम से कवि देशप्रेम को मानवीय मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है। सामाजिक राजनीतिक घटनाओं का चित्रण हो या प्राकृतिक सौंदर्य का निरूपण कवि भव्यतर भूमि पर जीवन के उदात्त का अन्वेषण करता है। यातना भोगकर जो सुखद भविष्य का निर्माण करते हैं वे निश्चय ही वंदनीय हैं और ऐसी कृतियां उनकी उपासना में प्रज्वलित ज्योति हैं। इतिहास को मानवीय संवेदनाओं और संदेशों में परिणित कर प्रस्तुत करना निश्चय ही उदात्त भावनाओं के उपासक कवि द्वारा ही संभव है और इस प्रयास में कवि 'सरोज' हमारी श्रद्धा के पात्र हैं।

उदात्त भावों की अभिव्यक्ति प्रांजल परिष्कृत भाषा द्वारा ही संभव है। प्रांजल और परिष्कृत का अर्थ क्लिष्टता कदापि नहीं अपितु भावानुगामिनी शब्द सम्पदा से है। 'स्तवन' की संस्कृत गर्भित भाषा और 'अवर्डीन युद्ध' या 'राउण्ड अप' की बोलचाल की भाषा एक ही लेखनी से लिखी जाकर भी सतही तौर पर दो स्तरों को सूचित करती हैं किंतु कृति के सम्पूर्ण प्रवाह में यह भिन्नता सहज ही विलुप्त हो जाती है। कथात्मक गतिशीलता में यह स्तर भिन्नता स्वाभाविकता में परिणित होकर काव्य का अनिवार्य अंग बन जाती है।

अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग और छंद वैविध्य कृति के कलापक्ष को पौढ़ता प्रदान करते हैं। कथ्य को प्रभावपूर्ण बनाने में छंद वैविध्य सहायक हुआ है। संगीतात्मकता और ध्वन्यात्मकता कविशैली की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। स्वाभाविकता को बनाए रखने के लिए कविने अंग्रेजी, उर्दू और स्थानीय हिन्दी बोली के शब्दों का निसंकोच प्रयोग किया है। छंद की प्राणरक्षा के लिए कवि ने शब्दों को तराशा भी है मन-चाहे ढंग से प्रयोग भी किया है। राजस्थल (4) ठानठानी (12) सोहक (4) मटियामेटी (8) ऐसे ही शब्द हैं। तुक मिलाने के लिए छंदबद्ध कविता में कुछ चासनी मिलानी ही पड़ती है पर यह चासनी तथाकथित आज की कविता की किसकिसाहट से अच्छी है। 'द्वीपदर्पण' ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही राजनीतिक स्वतंत्रता को मानवीय मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित करने में भी यह कृति एक सफल प्रयास है।

प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय
कार निकोबार – 744 301



सृष्टि और दृष्टि

प्रिय श्री गौड़,

आपके दोनों पत्र मिले हैं और साथ में आपके दोनों प्रकाशन भी मिले हैं। 'लघु भारत' में बैठकर आप सचमुच एक बृहत् कार्य कर रहे हैं। कहानी-संकलन आकार में छोटा होते हुए भी हमारी कल्पना और अभिव्यंजना में आज की भारतीय कहानी का प्रतिनिधित्व करने वाली सुंदर प्रतिकृति है। इन कहानियों में भारत का हृदय प्रतिबिंबित है। इस स्पृहणीय प्रयास के लिए आपका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

आपका कविता-संकलन भी वास्तव में आज की सारस्वत चेतना का एक सुन्दर प्रतीक है। लोक साहित्य की जो सुगंध इसमें मिलती है, वह मेरे लिए विशेष आकर्षक है। विशेषकर 'घट में राम, न जाना' बहुत सरल और प्रभावशाली है। विडंबना यही है कि हमारे चारों तरफ खिले हुए फूल जितने प्रफुल्लित हैं, उतने हम प्रबुद्ध मानव नहीं हो पा रहे हैं। यदि आज की कविता इन्सान में यह मुस्कान ला सके तो कविता सविता का काम कर सकती है।

मंगलकामना सहित,

— डा० पांडुरंग राव
कार्यकारी निदेशक
भारतीय ज्ञानपीठ
नयी दिल्ली

प्रिय श्री गौड़,

हिन्दी साहित्य कला परिषद् पोर्ट ब्लेयर द्वारा प्रकाशित आपकी पुस्तक "जाग उठे गीत" प्राप्त हुई। पुस्तक में बहुत ही महत्वपूर्ण एवं अर्थवान गीत हैं इसके लिए मैं आपको अपनी ओर से हार्दिक बधाई दे रहा हूं। सुदूर अण्डमान द्वीप समूह में हिन्दी की सेवा करते हुए आपने इस दिशा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया जिसे कथमपि विस्मृत नहीं किया जा सकता।

हिन्दी कला परिषद् पोर्टब्लेयर की पुस्तकें दिल्ली में किस प्रकाशक के पास उपलब्ध हैं कृपया हमें जानकारी भेजें। इस जानकारी से हम इन पुस्तकों को परिषद् के केन्द्रीय पुस्तकालय में मंगा सकेंगे।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

साभिवादन,

— डा० रामजन्म शर्मा
रीडर (हिन्दी)
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली-११००१६

प्रिय श्री गौड़ साहब,

आपका पत्रांक 708/91 दिनांक 28.9.91 के साथ कहानी संग्रह "अंडमान के हिन्दीतर कहानीकार" की प्रति मिली। पुस्तक की सभी कहानियाँ पढ़ गया। जीवन और समाज के विभिन्न पक्षों को रेखांकित करती हुई ये कहानियां बेहद अच्छी हैं। साहित्य निर्माण का कार्य तो तमाम लोग कर रहें ऐसे संग्रह का प्रकाशन कर आपने साहित्यिक निर्माण का कार्य किया है। इस

संग्रह के माध्यम से सम्पूर्ण भारत का साहित्यिक चिंतन आपने प्रस्तुत किया है। मैं आपके इस प्रयास की सराहना करता हूँ और आपको तथा सहयोगी जनों को साधुवाद देता हूं।

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ सकुशल व सानन्द हैं।

शुभकामनाओं सहित,

— अवध किशोर पाठक
लखनऊ

प्रिय श्री गौड़ जी,

आपकी दो रचनायें मिलीं – "चश्मदीद गवाह है यह" तथा "जाग उठे गीत–" पहली पुस्तक में ही "मैं अपना अहम नहीं बेचूँगा" तथा दूसरी पुस्तक में "परदेसी के गांव में" ऐसी रचनायें हैं जिन्हें वारवार पढ़ने का जी चाहता है। आपका लगाव मातृभूमि से कितना है, यह स्पष्ट है। भगवान आपकी काव्य साधना को निरन्तर सफलता प्रदान करें।

पुस्तक भेजने के लिये धन्यवाद।

— परिपूर्णानन्द वर्म्मा
कार्यकारी उपाध्यक्ष
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

आदरणीय बन्धु गौड़ जी, नमस्कार

इधर दो पुस्तकें और मिलीं – 'अंदमान के हिन्दी कहानीकार' और आपका 'जाग उठे गीत' कविता संग्रह। कहानी संकलन की कहानियों में घट-

नाएँ अपनी मूल संवेदनाओं को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी संवेद्यता हृदय को बड़ी गहराई से छूती है। अनुवाद भी कहीं अनुवाद नहीं लगता। ऐसा लगता है कि कहानियाँ हिन्दी के अपने मूल रूप में ही निबद्ध हैं। सम्प्रेषणीयता का कोई संकट नहीं है उनमें। यथावत् हृदय में उतरती चली जाती हैं।

'जाग उठे गीत' की सम्मति में जो यह लिखा गया कि ईश्वरी प्रसाद गौड़ रीति परम्परा को अपने साथ लिए अंदमान निकोबार पहुँचे, उससे मैं सहमत नहीं। मुझे इस संग्रह की कविताओं में रीति परम्परा नहीं हिन्दी की छायावादी कविता का प्रभाव अधिक परिलक्षित हुआ। वही कोमलकान्त पदावली, वही कल्पनाशीलता, वही वैयक्तिकता और वही रागात्मकता। आज की कविता की बौद्धिकता, तज्जन्य नीरसता और विच्छन्द गद्यमयता के परिप्रेक्ष्य में 'जाग उठे गीत' की कविताएं अपनी गेयता में हृदय को भावान्दोलित करती हैं जिसे मैं कविता का एक अपरिहार्य तत्त्व मानता हूं। भाषा की मसृणता, प्रतीकों की व्यंजकता और बिम्बों का सौन्दर्य कविताओं में यत्र-तत्र-सर्वत्र सुलभ है। मेरी हार्दिक बधाई !

आप सर्वतोभावेन सुदूर अंदमान निकोबार – द्वीप समूह में हिन्दी के पुरोधा बनकर जो हिन्दी-सेवा कर रहे हैं, उसके लिए आप प्रशस्य ही नहीं, नमस्य भी हैं।

भेंट प्रतियों के लिए सधन्यवाद।

श्री विलास
वाणीविलास प्रकाशन
धामपुर (बिजनौर)
उत्तर प्रदेश

प्रिय भाई,

आपके द्वारा प्रेषित पुस्तकें —

☐ अंदमान के हिन्दीतर कहानीकार

☐ जाग उठे गीत

☐ चश्मदीद गवाह है यह

— प्राप्त हुई मैं व्यस्तता वश न तो पावती ही दे पाया और न ही आभार व्यक्त कर सका किताबें बहुत अच्छी छपी हैं, बधाई आपकी रचनाशीलता का तो हम सभी हार्दिक सम्मान करते हैं आपने इतनी अच्छी पुस्तकें भेजीं, धन्यवाद आशा है, सानन्द होंगे।

-- ओम भारती
2213/4 ए, राइट टाउन
जबलपुर (म० प्र०)

आदरणीय

श्री ईश्वरी प्रसाद गौड़ जी,

सादर वन्दे, अभी डाक से आपका कविता-संग्रह "चश्मदीद गवाह है यह" मिला; पाकर (पढ़कर भी) अतीव आनंद हुआ। इससे पूर्व पत्रिका का अंक भी मिला है।

आपके स्नेह सद्भाव के लिए आभारी हूं! अपना कार्य निभाता रहूंगा।

गत वर्ष भारत के कई प्रदेशों में जाने का सुयोग मिला सब जगह आपके, और आपके हिन्दी साहित्य कला परिषद् के गुणगान करते हुए आत्म-संतोष पा सका हूं। उस आदर्श लघु भारत के निर्माताओं में आप जैसे तपस्वियों का प्रबल योगदान महत्वपूर्ण है।

कविता-संग्रह पढ़ रहा हूं। इस पर समीक्षा स्थानीय पत्रिका में प्रकाशित कराऊँगा ;

कविधर्म नहीं बेचूँगा, अण्डमान-सागर अभी पढ़ लिये हैं, बढ़िया रचा है, शेष पढ़ने के बाद आपको लिखूँगा। 'बहुरूपिये अण्डमान-सागर' के दर्शन कराकर आपने मेरी यादें ताज़ा कर दीं।

घर में, परिषद् के सहयोगी बंधुओं में – सब सकुशल रहने की कामना करता हूं। सबको मेरे यथायोग्य कहें।

— शौरि राजन
हिन्दी प्रचारक, तमिल और हिन्दी लेखक, पत्रकार
मद्रास

प्रिय श्री गौड़ जी,

आपका 'चश्मदीद गवाह है यह' काव्य संग्रह मिला। सहज, सरल, और सरस भाषा में आपकी अनुभूतियाँ और कविताएं इस काव्य संग्रह में साकार हुई हैं। लोकधुनों की आपकी रचना बड़ी आकर्षक हैं यदि आप उसे थोड़ा आधुनिक शब्दावली से बचाकर लोकशब्दावली से सजाते तो उनकी मोहकता और बढ़ जाती। अंदमान द्वीप पर और वहाँ के प्राकृतिक वातावरण का चित्रण आपके काव्य में बड़ा सटीक हैं। वास्तव में यही संस्कृति की मौलिक देन भी है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

साथ ही सहज सीधी हिन्दी कविता की पुस्तक का जो उर्दू नामकरण आपने किया वह मुझे काफी अटपटा सा लगा क्या हिन्दी के ऐसे शब्द नहीं थे कि उसके लिये आपको 'चश्मदीद' तक जाना पड़ा ?

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ और सानंद हैं। आपके मार्गदर्शन में आपकी परिषद् जो महत्वपूर्ण कार्य कर रही है वह सचमुच बड़ा प्रशंसनीय है। बधाई !

— रामनारायण अग्रवाल
ब्रज कला केन्द्र
गली रावलिया, लाल दरवाजा
मथुरा

प्रिय गौड़ जी,

आपको मेरा पत्र मिला होगा। 'जाग उठे गीत' की प्रति मिली। धन्यवाद आपमें गीत की सहज उच्छवासित प्रतिभा है। पुराने पिटेपन और तुकान्तो के, छन्द लय स्वरों के ढर्रे से वचते रहिये यही मेरा विनम्र सुझाव है पूरी पुस्तक पढ़ कर अधिक सफाई के साथ अपनी प्रतिक्रिया निवेदित करूँगा जैसा शायद कमी आपको लिखा था अपनी बची कुची ज्योति को अपने रचनात्मक काम के लिए रक्षित रखना चाहता हूं।

— अंचल
जबलपुर

प्रिय भाई गौड़,

आपका काव्य संकलन 'जाग उठे गीत मिला' धन्यवाद ! कविताएं पढ़ीं आपकी कविताएं हृदय को छूती हैं। भाषा सरल तथा बोधगम्य हैं। हिन्दी

साहित्य की इस संकलन से गौरव वृद्धि होगी।

आपके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

— पद्मश्री बरसाने लाल चतुर्वेदी डी० लिट्
13/7 शक्तिनगर
दिल्ली - 7

भाई साहब, नमस्कार !

कहानी पुस्तक देखी। सम्पादक मन्डल को खासकर आपको व सावित्री को बधाई देनी है। स्वीकार करें।

इस वर्ष क्या कार्यक्रम है ! मैं भी कुछ रचनाएं भेजूँ क्या ? अपनी पत्रिका में छपना अच्छा ही लगेगा। मैं भी पुनः योजना बना रहा हूं यदि पूर्ण हो पाई तो फिर से पत्रिका का प्रकाशन आरंभ करूँगा। तब आपकी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

— विनोद तिवारी
ई - 114/12 शिवाजीनगर
भोपाल (म० प्र०) 462016

माननीय गौढ़ साहब,

सादर राम राम ! आपका काव्य संग्रह मिला, आपने याद रखा, आभारी हूँ – आपको धन्यवाद !

कुछ कविताएँ तो मन को छू गई, शब्दों का चयन जादू का सा लगता है। सेल्यूलर कारागार, तट का अस्तित्व, सागर तट: दोपहर भोर निकोबार की, अण्डमान सागर, सागर रंग अनेक, आतंक वाद, नयनो में मस्ती का काजल, तरसे मन में प्यार आदि कविताएँ पाठकों का मन मोह लेगी। आपने नई कविता के रूप में सहज प्रयोग किया है - कविता से भावो की सहज अभिव्यक्त हुई है तथा 44–45 वर्षों पूर्व की याद भी दिलाती है। कागज छपाई अच्छी है वर्तनी शुद्ध है आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कविता पुस्तक के रेपर से स्पष्ट हुआ कि आपका कहानी संग्रह भी छपा है। कहानी संग्रह में मेरी रुचि हो सकती है।

— डॉ० जमनालाल वायती डी० लिट्
प्रवाचक शिक्षा प्रशासन
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा
संस्थान बीकानेर (राज०)
334001

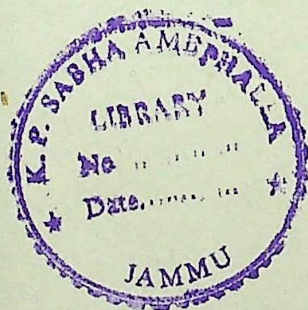
श्रीवर गौड़ जी,

'अं० के हिं० कहानीकार' की प्रति मिली। आपके आत्मीय स्नेह से अभिभूत हूं।

कुछ भी हो आपका एवं आपकी परिषद् की प्रस्तुतियां पत्रिका स्तरीय मानक ज्ञानवर्धक तथा सुदर्शन होती है। एकांतिक अंडमान द्वीप में बैठकर ऐसी ठोस साहित्यक उपलब्धियां तारांकनीय एवं अतीव सराहय है। यह केवल आपकी दम का जहूरा है, सचमुच आपश्री बहुमुखीन साहित्यिक छिपे रूस्तम् निकले।

'चश्मदीद गवाह है यह' की प्रति भी मिली। नई कविता की यह अभिनव प्रस्तुति है। काश आप मुख्यभूमि में होते। मुझे अच्छी तरह याद है कि महिने डेढ़ महिने पहले मैंने अपने नवप्रकाशित प्रबंधकाव्य रामायत तिथि पत्र (उत्तरार्ध) की एक प्रति प्रेषित की थी, जरूर मिली होगी, क्योंकि आपका डाकिया पक्का है। आपश्री अण्डमान के सिर मौर साहित्यकार सम्पादक है मेरी निश्चित सूचना से विगत सत्तावनी गदर के कुचले जाने के बाद कानपुर के नाना साहब के करीब डेढ़ सौ साथी अण्डमान जेल भेजे गए थे फिर उनका क्या हुआ? सेल्यूलर जेल का रिकार्ड क्या कहता है। कभी इस विषय पर भी POINTED शोधपूर्ण लेख या खण्ड काव्य लिखें या सावरकर के मोपला की तरह कोई उपन्यास स्वयं प्रकाशित करें। मैं आपकी कृति का सूक्ष्म गहन अध्ययन करके पुनः प्रतिक्रिया भेजूँगा।

— राजेन्द्र चान्द्रायण
202 विश्वासखंड II
गोमतीनगर लखनऊ - 16





(98)

परिषद् के गौरवशाली प्रकाशन :-

त्रैमासिक पत्रिका	— द्वीप लहरी	5/-
1. जाग उठे गीत-कविता संग्रह (नवीन संस्करण)	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	35/-
2. समय के पाखी-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	15/-
3. गीत-अगीत-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	15/-
4. शादी कर पछतानी-कविता	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	5/-
5. काला पानी-कहानी संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	25/-
6. घिरी शिशिर की रात-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	25/-
7. अंदमान के हिन्दी कवि-कविता संग्रह	— सं० सुरेश नंदन प्रसाद सिंह	25/-
8. अंदमान के हिन्दी कहानीकार-कहानी संग्रह	— सं डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी	25/-
9. अंदमान तथा निकोबार के आदिवासी और उनकी बोली	— डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी	50-/
10. अंदमान निकोबार की लोककथाएँ	— लीलाधर मंडलोई-जे एस राज	25/-
11. द्वीप दर्पण-कथा-काव्य	— आनन्द बल्लभ शर्मा 'सरोज'	10/-
12. अंदमान के हिन्दीतर कहानीकार	(सम्पादित)	35/-